नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 390, नई दिल्ली, सोमवार 30 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"सच्ची सफलता वही है,जो केवल ऊँचाई तक पहुँचने में नहीं,बल्कि दूसरों को साथ लेकर आगे बढ़ने में मिलती है।"

03 अंक 4 अंक ज्योतिष में:राहु की शक्तिः

06 रिश्तों की ताकत और सहारा

08 राजा सरायकेला एवं पूर्व मुख्यमंत्री ने ऐतिहासिक अखाड़े स्थल से आरंभ किया जूलूस

राजधानी में 'परिवहन विशेष कॉन्क्लेव 2026' का भव्य आयोजन; सुरक्षित और आधुनिक सफर के लिए विशेषज्ञों ने दिया मंत्र

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली : राजधानी दिल्ली का प्रतिष्ठित मावलंकर हॉल (कॉन्स्टीट्यूशन क्लब) देश के परिवहन क्षेत्र की सबसे बड़ी वैचारिक चर्चा का साक्षी बना। 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र समूह द्वारा आयोजित "तीसरे परिवहन विशेष कॉन्क्लेव एवं एक्सीलेंस अवार्ड समारोह 2026" का भव्य आयोजन संपन्न हुआ, जिसमें नीति निर्धारकों, कानूनी विशेषज्ञों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने एक मंच पर जुटकर भविष्य के सुरक्षित सफर का रोडमैप तैयार किया।

सांस्कृतिक प्रस्तुति और शुभारंभ

कार्यक्रम की शुरुआत बेहद भक्तिमय माहौल में हुई। सुप्रसिद्ध समाजसेविका एवं उद्यमी नैंसी बाठला जी द्वारा प्रस्तुत 'गणेश वंदना' और दीप प्रज्वलन के साथ कॉन्क्लेव का औपचारिक शुभारंभ हुआ।

मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति राजेश टंडन का संबोधन

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति श्री राजेश टंडन जी (पूर्व न्यायाधीश, उत्तराखंड उच्च न्यायालय) ने अपने संबोधन में 'सड़क सुरक्षा और कानून' के अंतर्संबंधों पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा:

"परिवहन केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह देश की प्रगति की जीवन रेखा है। सड़क दुर्घटनाओं को केवल तकनीक से नहीं, बल्कि कड़े कानूनी पालन और मानवीय संवेदनशीलता से रोका जा सकता है। हमें एक ऐसी संस्कृति विकसित करनी होगी जहाँ हर नागरिक यातायात नियमों को बोझ नहीं, बल्कि अपनी सुरक्षा का कवच समझे।"

विशेषज्ञों के विचार और मंथन

कॉन्क्लेव के दौरान विभिन्न सत्रों में 'गेस्ट ऑफ ऑनर' के रूप में पधारे प्रशासनिक अधिकारियों और विशेषज्ञों ने अपने विचार रखे:

जलवायु परिवर्तन : विशेषज्ञों ने इलेक्ट्रिक वाहनों और ग्रीन एनर्जी को अपनाने पर ज़ोर दिया।

महिला सुरक्षा : सार्वजनिक परिवहन में पैनिक बटन और बेहतर निगरानी तंत्र की आवश्यकता बताई गई।

सड़क दुर्घटनाएं एवं ट्रैफिक जाम : सुरक्षित सफर और सुगम यातायात के लिए आधुनिक विकल्पों पर चर्चा करना।

साइबर सुरक्षा : डिजिटल पेमेंट और परिवहन डेटा की सुरक्षा को भविष्य की बड़ी चुनौती करार दिया गया।

सम्मान और सांस्कृतिक झलक

चर्चा के साथ-साथ कार्यक्रम में उन विशिष्ट हस्तियों को 'एक्सीलेंस अवार्ड' से नवाजा गया, जिन्होंने समाज और परिवहन सुधार में उत्कृष्ट योगदान दिया है। बीच-बीच में हुए लघु सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने कॉन्क्लेव के माहौल को उत्साह से भर दिया।

'ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज़ लिमिटेड' द्वारा आयोजित यह कॉन्क्लेव सुरक्षित, स्वच्छ और आधुनिक भारत की दिशा में एक बड़ा मील का पत्थर साबित हुआ है। कार्यक्रम के अंत में आए हुए सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया।

शेष झलकियां पेज 2 और 3 पर

'परिवहन विशेष कॉन्क्लेव 2026' के भव्य आयोजन की झलकियां....

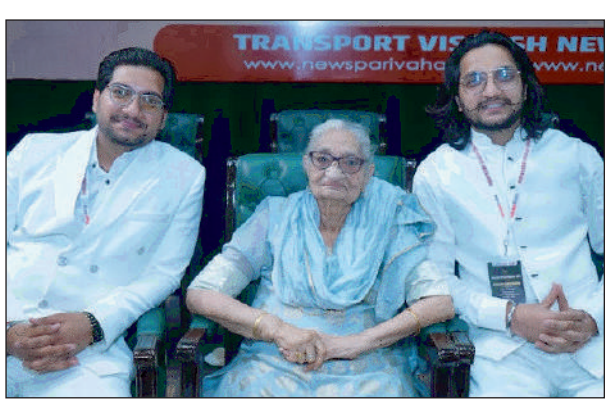

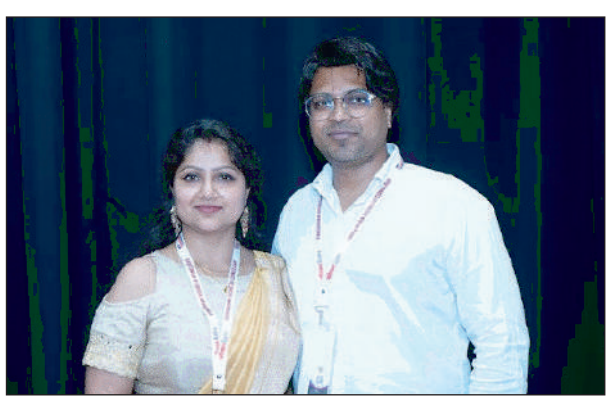

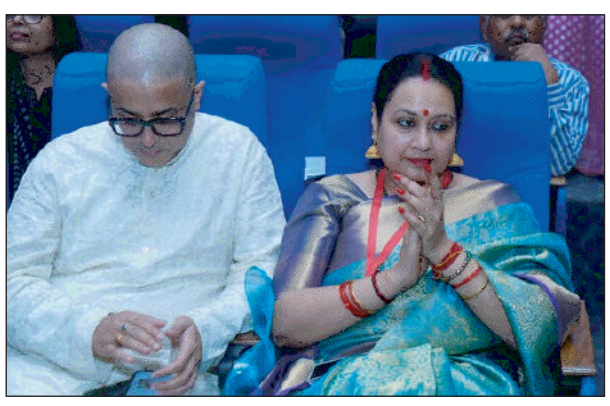

supported by :
TRYBOXS
www.tryboxs.in

Hon'ble Justice Mr. Rajesh Tandon Ji

TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in

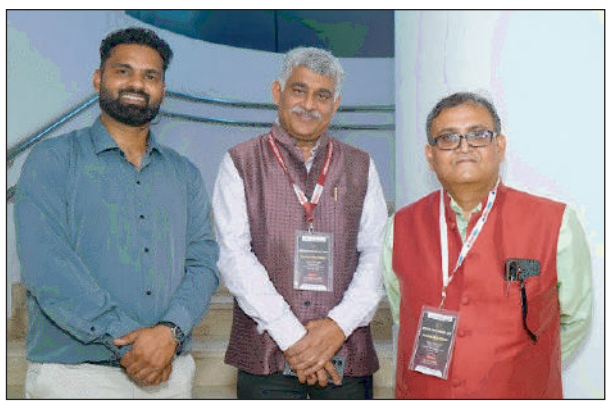

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

अंक 4 अंक ज्योतिष में: राहु की शक्ति

डॉ. पूजाप्रसुन एन
गोल्ड मेडलिस्ट
Shivoham Shastr
shivohamshastr.com
09599101326, 07303855446

1. अंक 4 का मूल महत्व

अंक 4 का स्वामी राहु है, जो एक छाया ग्रह है और माया (भ्रम), अचानक घटनाओं, अपरंपरागत मार्गों, नवाचार, विद्रोह और भौतिक इच्छाओं के लिए जाना जाता है। पारंपरिक ग्रहों के विपरीत, राहु नियमों का पालन नहीं करता—यह पैटर्न को तोड़ता है और नए बनाता है। यह अंक व्यावहारिक सोच (अलग अंदाज़ के साथ), मजबूत इच्छाशक्ति, अप्रत्याशितता, गहरी विश्लेषणात्मक क्षमता और कुछ अलग हासिल करने की इच्छा को दर्शाता है। अंक 4 से प्रभावित लोग अक्सर गैर-पारंपरिक सोच वाले होते हैं, जो अपने अनोखे रास्ते पर चलते हैं और समाज के नियमों को चुनौती देते हैं।

2. जब अंक 4 (राहु) मजबूत / सकारात्मक होता है

जब राहु की ऊर्जा संतुलित होती है, तो यह आधुनिक क्षेत्रों में असाधारण सफलता देता है।

व्यक्तित्व गुण: ऐसे व्यक्ति बुद्धिमान, विश्लेषणात्मक, नवाचारी, साहसी, रणनीतिक और मानसिक रूप से मजबूत होते हैं। ये वहां अवसर देखते हैं जहां अन्य लोग समस्याएं देखते हैं।

करियर: तकनीक, मीडिया, राजनीति, शोध और विदेशी कार्यों में सफलता मिलती है। ये जटिल और प्रतिस्पर्धी वातावरण को बखूबी संभालते हैं।

आर्थिक प्रभाव: अचानक आर्थिक लाभ, सट्टा क्षेत्रों में सफलता और धन बनाने के अनोखे तरीके।

संबंध: वफादार लेकिन भावनात्मक रूप से जटिल; ये रिश्तों में स्वतंत्रता को महत्व देते हैं।

मानसिक शक्ति: जबरदस्त समस्या-समाधान क्षमता और भीड़ के खिलाफ जाने का साहस।

3. जब अंक 4 (राहु) कमजोर / नकारात्मक होता है

असंतुलित राहु भ्रम, अस्थिरता और विनाशकारी प्रवृत्तियाँ पैदा करता है।

व्यक्तित्व: अत्यधिक सोच, नकारात्मक/विद्रोही रवैया, नशे की लत, चालाकी या झूठी दुनिया में जीना।

करियर: अचानक नुकसान, अस्थिरता, दिशा की कमी और अनैतिक कार्यों की ओर झुकाव।

आर्थिक: खराब वित्तीय योजना और शॉर्टकट या अवैध कमाई का आकर्षण।

संबंध: गलतफहमियां, विश्वास की कमी, गुप्त व्यवहार और अचानक अलगाव।

मानसिक प्रभाव: चिंता, तनाव, अवसाद, असुरक्षा और खुद को अकेला महसूस करना।

4. राहु के कमजोर होने के संकेत

जीवन में अचानक उतार-चढ़ाव, निर्णयों में भ्रम, गलत संगति, अस्थिर करियर, बिना कारण डर, अनिद्रा और नशे की आदतें इसके प्रमुख संकेत हैं।

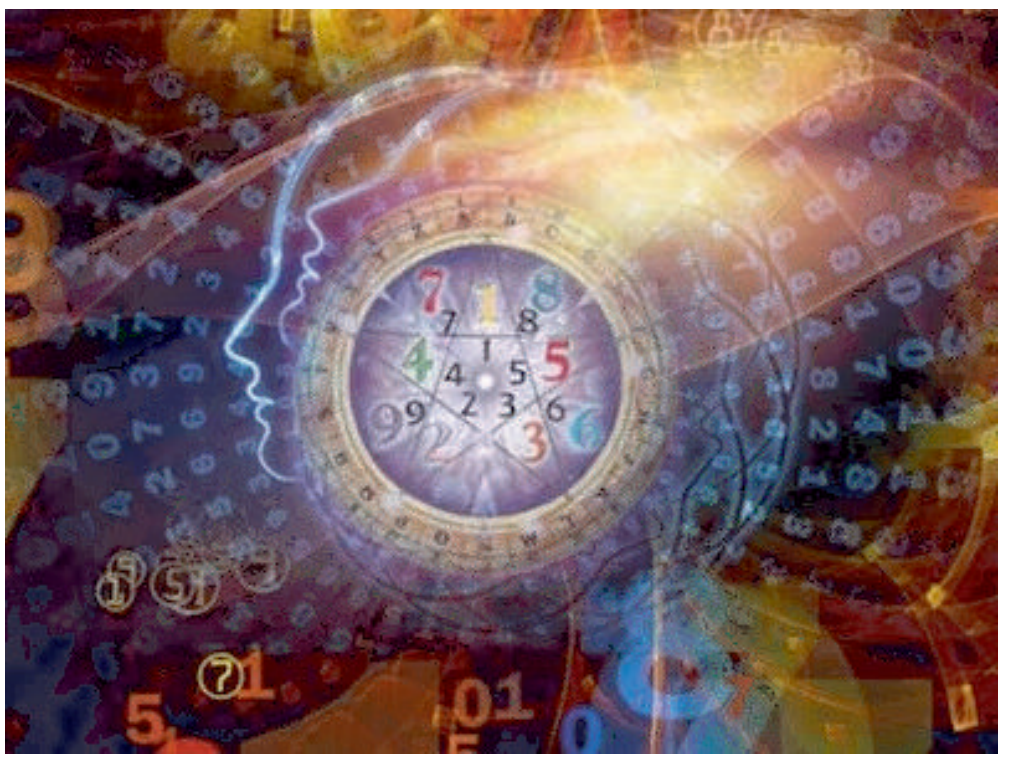

5. अंक 4 (राहु) को संतुलित करने के उपाय

आध्यात्मिक: भगवान भैरव या माता दुर्गा की पूजा करें। ₹ॐ रां राहवे नमः₹ का 108 बार जाप करें।

जीवनशैली: अनुशासन बनाए रखें, शॉर्टकट से बचें, नकारात्मक लोगों से दूर रहें और ध्यान करें।

दान: शनिवार/बुधवार को काले तिल, सरसों तेल या कंबल का दान करें। कुत्तों को भोजन कराएं।

रंग: सफेद, क्रीम या हल्के नीले रंग पहनें। काले और गहरे रंगों से बचें।

भोजन: तामसिक भोजन, शराब और धूम्रपान से पूरी तरह दूर रहें।

रत्न: उचित सलाह के बाद शनिवार को चांदी में 'गोमेद' (Hessonite) मध्यमा उंगली में पहनें।

6. संबंधित व्यवसाय

मजबूत अंक 4 वाले आईटी, मीडिया, फिल्म, राजनीति, शोध, विदेशी व्यापार, एविएशन और डिजिटल क्षेत्रों में अत्यधिक सफल होते हैं।

7. निष्कर्ष

अंक 4 भ्रम, नवाचार और परिवर्तन का प्रतीक है। यदि इसे अनुशासन और जागरूकता के साथ सही दिशा दी जाए, तो यह असाधारण सफलता और अचानक उन्नति देता है। लेकिन अनियंत्रित होने पर यह केवल अराजकता और पतन की ओर ले जाता है। सच्ची शक्ति मन और दिशा पर नियंत्रण रखने में है।

2 अप्रैल को मनाया जायेगा हनुमान जन्मोत्सव.....

हर साल चैत्र माह की पूर्णिमा के दिन हनुमान जन्मोत्सव मनाया जाता है।

पौराणिक और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन संकटमोचन हनुमान जी का अवतरण हुआ था, इसलिए देशभर में इस दिन उनके जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस दिन हनुमान जी की पूरे...

हर साल चैत्र माह की पूर्णिमा के दिन हनुमान जन्मोत्सव मनाया जाता है। पौराणिक और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन संकटमोचन हनुमान जी का अवतरण हुआ था, इसलिए देशभर में इस दिन उनके जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस दिन हनुमान जी की पूरे विधि-विधान से पूजा की जाती है। इस साल हनुमान जन्मोत्सव 2 अप्रैल 2026 को मनाया जाएगा। पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान जयपुर जोधपुर के निदेशक ज्योतिषाचार्य डॉ. अनीष व्यास ने बताया कि वैदिक हिन्दू पंचांग के अनुसार, चैत्र पूर्णिमा तिथि की शुरुआत 1 अप्रैल को सुबह 7:08 मिनट से हो रही है। जो अगले दिन 2 अप्रैल को सुबह 7:41 मिनट तक रहेगी। शास्त्रों में उदया तिथि की महत्ता को देखते हुए हनुमान जयंती का उत्सव 2 अप्रैल को ही मनाया जाएगा।

हनुमान जी का जन्म मंगलवार को हुआ था। इसी वजह से हर मंगलवार हनुमान जी की विशेष पूजा की जाती है। इसके अलावा शनिवार भी हनुमान जी को प्रिय है। हनुमान जन्मोत्सव चैत्र मास की पूर्णिमा पर मनाई जाती है। त्रेता युग में इस तिथि पर सुबह-सुबह हनुमान जी का जन्म हुआ था। उस दिन मंगलवार था। इनके पिता केसरी और माता अंजनी थीं। हनुमान जी महादेव का रूद्र अवतार हैं। हनुमान जी महाराज को अलौकिक और दिव्य शक्तियां प्राप्त हैं। उन्हें बल, बुद्धि, विद्या का दाता कहा जाता है। हनुमान जी महाराज के पास अष्ट सिद्धि और नवनिधि हैं। शिव पुराण के अनुसार हनुमान जी ही शिवजी के 11वें अवतार हैं। हनुमान जी को पवन पुत्र के नाम से भी जाना जाता है और उनके पिता वायु देव भी माने जाते हैं।

वैदिक हिन्दू पंचांग के अनुसार, चैत्र पूर्णिमा तिथि की शुरुआत 1 अप्रैल को सुबह 7:08 मिनट से हो रही है। जो अगले दिन 2 अप्रैल को सुबह 7:41 मिनट तक रहेगी। शास्त्रों में उदया तिथि की महत्ता को देखते हुए हनुमान जयंती का उत्सव 2 अप्रैल को ही मनाया जाएगा।

भगवान शिव के अवतार है हनुमान

भगवान हनुमान को महादेव का 11वां अवतार भी माना जाता है। हनुमान जी की पूजा करने और व्रत रखने से हनुमान जी का आर्शीवाद प्राप्त होता है और जीवन में किसी प्रकार का संकट नहीं आता है, इसलिए हनुमान जी को संकट मोचक भी कहा गया है। जिन लोगों की कुंडली में शनि अशुभ स्थिति में हैं या फिर शनि की साढ़ेसाती चल रही है, उन लोगों को हनुमान जी की पूजा विधि करना चाहिए। ऐसा करने से शनि ग्रह से जुड़ी दिक्कतें दूर हो जाती है। हनुमान जी को मंगलकारी कहा गया है, इसलिए इनकी पूजा जीवन में मंगल लेकर आती हैं।

अष्ट चिरंजीवियों में से एक हैं हनुमानजी

धर्म ग्रंथों में 8 ऐसे पौराणिक पात्रों के बारे में बताया गया है, जिन्हें अमर माना जाता है। हनुमानजी भी इनमें से एक है। इस संबंध में एक श्लोक भी मिलता है। उसके अनुसार

अश्वत्थामा बलिव्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तएतै चिरजीविनः॥
सप्तैता-संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतं सोपि सर्वव्याधिविवर्जित।।

अर्थ- अश्वथामा, दैत्यराज बलि, महर्षि वेद व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम और मार्कण्डेय ऋषि, ये 8 अमर हैं। रोज सुबह इनका स्मरण करने से निरोगी शरीर और लंबी आयु मिलती है।

पूजा विधि

हनुमान जी का जन्म सूर्योदय के समय हुआ था, इसलिए हनुमान जन्मोत्सव के दिन ब्रह्म मुहूर्त में पूजा करना अच्छा माना गया है। हनुमान जन्मोत्सव के दिन जातक को ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिए। इसके बाद घर की साफ-सफाई करने के बाद गंगाजल का छिड़काव कर घर को पवित्र कर लें। स्नान आदि के बाद हनुमान मंदिर या घर पर पूजा करनी चाहिए। पूजा के दौरान हनुमान जी को सिंदूर और चोला अर्पित करना चाहिए। मान्यता है कि चमेली का तेल अर्पित करने से हनुमान जी प्रसन्न होते हैं। पूजा के दौरान सभी देवी-देवताओं को जल और पंचामृत अर्पित करें। अब अबीर, गुलाल, अक्षत, फूल, धूप-दीप और भोग आदि लगाकर पूजा करें। सरसों के तेल का दीपक जलाएं। हनुमान जी को विशेष पान का बीड़ा चढ़ाएं। इसमें गुलकंद, बादाम कतरी डालें। ऐसा करने से भगवान की विशेष कृपा आपको मिलती है। हनुमान चालीसा, सुंदरकांड और हनुमान आरती का पाठ करें। आरती के बाद प्रसाद वितरित करें।

हनुमान जी के ये 12 नाम लेने से सभी बिगड़ें काम बन जाते हैं-

ॐ हनुमान ॐ अंजनी सुत ॐ वायु पुत्र ॐ महाबल ॐ रामेष्ठ

ॐ फाल्गुण सखा ॐ पिंगाक्ष ॐ अमित विक्रम ॐ उदधिक्रमण

ॐ सीता शोक विनाशन ॐ लक्ष्मण प्राण दाता ॐ दशग्रीव दर्पहा

हनुमान जी को प्रसन्न करने के राशि अनुसार मंत्र-

मेष राशि
ॐ सर्वदुखहराय नमः
वृषभ राशि
ॐ कपिसेनानायक नमः
मिथुन राशि
ॐ मनोजवाय नमः
कर्क राशि
ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः
सिंह राशि
ॐ परशौर्य विनाशन नमः
कन्या राशि
ॐ पंचवक्त्र नमः
तुला राशि
ॐ सर्वग्रह विनाशिने नमः
वृश्चिक राशि
ॐ सर्वबन्धविमोक्त्रे नमः
धनु राशि
ॐ चिरंजीविते नमः
मकर राशि
ॐ सुरार्चिते नमः
कुंभ राशि
ॐ वज्रकाय नमः
मीन राशि
ॐ कामरूपिणे नमः

समाधि और मृत्यु के बीच की स्पष्ट अंतर

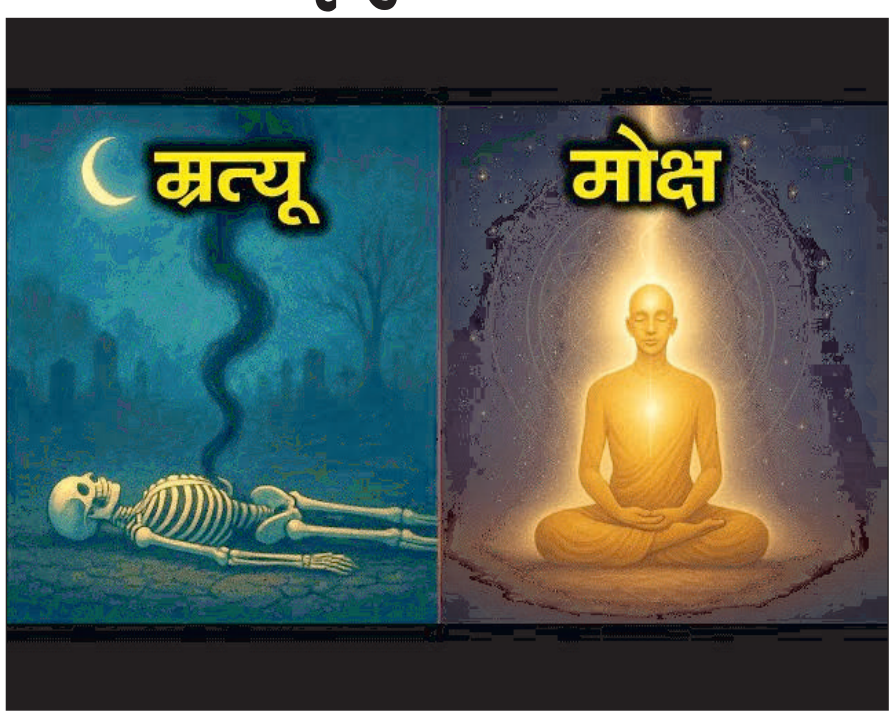

पिंकी कुंडू

साधारण दृष्टि में श्वास केवल हवा का आना-जाना है, लेकिन योग और अध्यात्म में श्वास ही 'प्राण' का वाहन है। इस आवागमन के रुकने के दो अलग-अलग अर्थ होते हैं, जो मनुष्य की नियति को पूरी तरह बदल देते हैं।

1. मृत्यु: जब द्वार बंद हो जाए

जब शरीर की शक्ति क्षीण हो जाती है और श्वास बाहर की ओर प्रवाहित होकर पुनः भीतर की ओर नहीं लौट पाती, तो उसे मृत्यु कहा जाता है।

* यह एक अनिवार्य घटना है, जो प्रकृति के नियम के अधीन है।

* यहाँ जीव विवश है; शरीर थक चुका है और प्राण अब इस पुराने घर को छोड़कर बाहर निकल गए हैं।

* यह 'छूट जाना' है, जहाँ चेतना का भौतिक शरीर से संबंध विच्छेद हो जाता है।

2. समाधि: जब गति विश्राम बन जाए

इसके विपरीत, जब वही श्वास बाहर जाने के बजाय भीतर ही ठहर जाए, अपने केंद्र पर पूर्णतः विश्राम पा ले, तो वह समाधि है।

* यह विवशता नहीं, बल्कि स्वैच्छिक और सजग अवस्था है।

* समाधि में श्वास का रुकना मृत्यु नहीं, बल्कि 'कुम्भक' की वह पराकाष्ठा है जहाँ मन पूरी तरह शांत हो जाता है।

* यहाँ प्राण बाहर नहीं भटकते, बल्कि आत्मा के महासागर में विलीन हो जाते हैं। इसे ही 'जीवित रहते हुए भी मुक्त हो जाना' कहते हैं।

स्थिति श्वास की दिशा अवस्था परिणाम

मृत्यु बाहर की ओर (बहिर्मुखी) विवशता और अंत पुनर्जन्म का चक्र और आवागमन

समाधि भीतर की ओर (अंतर्मुखी) परम शांति और ठहराव एवं समस्त चक्रों से सदा सदा हेतु मुक्ति

सार: मृत्यु शरीर का अंत है, जबकि समाधि अहंकार का अंत है। मृत्यु में हम 'छीन' लिए जाते हैं, लेकिन समाधि में हम 'स्वयं को पा' लेते हैं। जब श्वास बाहर निकलकर न लौटे तो शरीर शांत होता है, लेकिन जब श्वास भीतर ही ठहर जाए तो संसार शांत हो जाता है।

वैतरणी नदी: यमलोक के द्वार का वो भयानक रहस्य

पिंकी कुंडू

शास्त्रों (गरुड़ पुराण, विष्णु पुराण) के अनुसार, मृत्यु के पश्चात आत्मा की यात्रा केवल अंत नहीं, बल्कि एक कठिन मार्ग की शुरुआत है। इसी मार्ग में नरक और यमलोक की सीमा पर स्थित है—वैतरणी नदी।

कैसी है यह खौफनाक नदी? यह कोई साधारण जलधारा नहीं, बल्कि पापों का हिसाब करने वाली एक अग्नि परीक्षा है:

प्रकृति: इसमें शीतल जल नहीं, बल्कि खौलता हुआ रक्त, पीप (pus), और कीचड़ भरा है।

तापमान: इसका 'जल' तेजाब के समान उबलता रहता है, जो अधर्मी आत्माओं को झुलसा देता है।

भयानक जीव: नदी में विशाल साँप, बिच्छू, मगरमच्छ और मांस खाने वाले पक्षी आत्मा को निरंतर कष्ट देते हैं।

इस नदी की लहरों में कौन गिरता है? गरुड़ पुराण स्पष्ट कहता है कि जो अपने जीवनकाल में इन कुकर्मों में लिप्त रहते हैं, उन्हें इस नदी में धकेला जाता है:

1. अनादर: माता-पिता, गुरु और विद्वानों का अपमान करने वाले।

2. अधर्म: झूठ, छल-कपट, विश्वासघात और चोरी करने वाले।

3. पाप: गौ-हत्या, गौ-अपमान या बेसहारा जीवों को सताने वाले।

4. लोभ: सामर्थ्य होते हुए भी दान न करने वाले और संचय की प्रवृत्ति रखने वाले।

वैतरणी पार करने का एकमात्र सेतु: 'गौदान' जब आत्मा इस भयानक नदी के तट पर थर-थर कांपती है, तब उसके द्वारा जीवन में किए गए निस्वार्थ पुण्य ही काम आते हैं।

महत्व: जिसने श्रद्धापूर्वक 'गौदान' किया होता है, वह गाय स्वयं वहां प्रकट होकर उस आत्मा को अपनी पूंछ के सहारे इस दुर्गम नदी से पार करा देती है।

वैतरणी दान की महिमा मृत्यु के समय या श्राद्ध पक्ष में किए जाने वाले इस दान का विशेष विधान है:

#मुख्य सामग्री: काली गाय (या प्रतीकात्मक), तिल, लोहा, कंबल, जल पात्र और अन्न।

भाव: यह दान आत्मा की दुर्गति को रोककर उसे सद्गति की ओर ले जाता है।

आध्यात्मिक संदेश: बचाव का मार्ग वैतरणी नदी केवल भय पैदा करने के लिए नहीं, बल्कि हमें जागृत करने के लिए है। इससे बचने का मार्ग आज और अभी से शुरू होता है:

1. सत्य का आचरण करें।

2. करुणा और परोपकार को अपनाएं।

3. गौ-सेवा और धर्म के मार्ग पर चलें।

4. मृत्यु के बाद धन-संपत्ति यहीं रह जाएगी, केवल आपके द्वारा किए गए 'कर्म' ही वैतरणी के उस पार आपके साथी होंगे।"

सीएम नायब सैनी ने कार्यकर्ताओं के साथ सुनी PM की 'मन की बात', पेट्रोल-डीजल की कीमतों और विपक्ष पर दिया बड़ा बयान

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा के मुख्यमंत्री रविवार को कुरुक्षेत्र पहुंचे। यहां सेक्टर-8 स्थित भाजपा कार्यालय में उन्होंने प्रधानमंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम का 132वां संस्करण कार्यकर्ताओं के साथ सुना और जिले में चल रहे विकास कार्यों की जानकारी भी ली।

कुरुक्षेत्र :हरियाणा के मुख्यमंत्री रविवार को कुरुक्षेत्र पहुंचे। यहां सेक्टर-8 स्थित भाजपा कार्यालय में उन्होंने प्रधानमंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम का 132वां संस्करण कार्यकर्ताओं के साथ सुना और जिले में चल रहे विकास कार्यों की जानकारी भी ली।

कार्यक्रम के बाद मीडिया से बातचीत में मुख्यमंत्री ने कहा कि 'मन की बात' के माध्यम से देशभर में समाज और राष्ट्र के लिए कार्य कर रहे लोगों की प्रेरणादायक कहानियां सामने आती हैं, जिससे आमजन को नई ऊर्जा और उत्साह मिलता है। उन्होंने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम देश में एकता और जनभागीदारी को मजबूत करते हैं।

मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रधानमंत्री ने कार्यक्रम में वैश्विक परिस्थितियों का जिक्र करते हुए देशवासियों को एकजुट रहने का संदेश दिया है। उन्होंने कहा कि ऐसे समय में लोगों को अफवाहों से दूर रहकर मिलकर चुनौतियों का सामना करना चाहिए।

पेट्रोल-डीजल की कीमतों पर उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के कारण दुनिया भर में दाम बढ़े हैं, लेकिन केंद्र सरकार ने एक्साइज ड्यूटी में कमी कर आमजन को राहत देने का प्रयास किया है।

इस दौरान मुख्यमंत्री ने विपक्ष पर भी टिप्पणी करते हुए कहा कि कुछ राज्यों में योजनाओं के क्रियान्वयन में अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य योजनाओं को जमीन तक पहुंचाना और लोगों को उसका लाभ देना है।

कुरुक्षेत्र में दो बाइकों की भीषण भिड़ंत, दो लोगों की मौत...

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिले के पिहोवा क्षेत्र में भट्ठ माजरा गांव के पास दो बाइकों की आमने-सामने टक्कर में दो लोगों की मौत हो गई, जबकि दूसरी बाइक पर सवार चाचा-भतीजा घायल हो गए। हादसे के बाद डायल-112 की टीम ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया।

हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिले के पिहोवा क्षेत्र में भट्ठ माजरा गांव के पास दो बाइकों की आमने-सामने टक्कर में दो लोगों की मौत हो गई, जबकि दूसरी बाइक पर सवार चाचा-भतीजा घायल हो गए। हादसे के बाद डायल-112 की टीम ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया।

मृतकों की पहचान शाहपुर गांव निवासी शिव कुमार (40) और पप्पल (50) के रूप में हुई है। दोनों किसी काम से शहर गए थे और देर रात अपने गांव लौट रहे थे। शिव कुमार अपने पीछे पत्नी और तीन छोटे बच्चों को छोड़ गया है। वह परिवार का एकमात्र कमाने वाला था, जबकि पप्पल मजदूरी का काम करता था।

पुलिस के अनुसार, शिव कुमार और पप्पल जुरासी लिंक रोड से होकर अपने गांव लौट रहे थे। इसी दौरान सामने से आ रही दूसरी बाइक से उनकी टक्कर हो गई। दूसरी बाइक पर हरीगढ़-भोरख के पास डेरे में रहने वाला साबु (22) अपने भतीजे के साथ सवार था।

हादसे में चारों लोग घायल हो गए। सूचना मिलते ही डायल-112 की टीम मौके पर पहुंची और बिना एम्बुलेंस का इंतजार किए घायलों को अपनी गाड़ी से अस्पताल पहुंचाया। वहां डॉक्टरों ने शिव कुमार को मृत घोषित कर दिया, जबकि अन्य घायलों को उपचार दिया गया।

गंभीर रूप से घायल पप्पल को परिजन पीजीआई चंडीगढ़ ले गए, जहां इलाज के दौरान उसकी भी मौत हो गई। साबु का उपचार जारी है, जबकि बच्चे को मामूली चोटें आई हैं। पुलिस ने दोनों शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। परिजनों के बयान दर्ज किए जा रहे हैं, जिनके आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सावधान! लॉकडाउन की अफवाह वाली रील बनाई तो खैर नहीं, हरियाणा साइबर सेल की 'इंस्टाग्राम' पर पैनी नजर

पारवहन विशेष न्यूज

अगर आप भी इंस्टाग्राम पर रील्स (Instagram Reels) बनाकर फॉलोअर्स बढ़ाने के शौकीन हैं, तो यह खबर आपके लिए बहुत जरूरी है। हरियाणा पुलिस की स्टेट साइबर सेल ने सोशल मीडिया पर भ्रामक खबरें और लॉकडाउन (Lockdown) जैसी अफवाहें फैलाने वालों के खिलाफ 'डिजिटल...

चंडीगढ़ : अगर आप भी इंस्टाग्राम पर रील्स (Instagram Reels) बनाकर फॉलोअर्स बढ़ाने के शौकीन हैं, तो यह खबर आपके लिए बहुत जरूरी है। हरियाणा पुलिस की स्टेट साइबर सेल ने सोशल मीडिया पर भ्रामक खबरें और लॉकडाउन (Lockdown) जैसी अफवाहें फैलाने वालों के खिलाफ 'डिजिटल स्ट्राइक' की तैयारी कर ली है। अब ऐसी कोई भी पोस्ट या रील जो जनता में डर पैदा करे, सीधे जेल की हवा खिला सकती है।

पिछले कुछ दिनों से देखा जा रहा है कि व्यूज और लाइक्स के चक्कर में कुछ युवा पुराने वीडियो को एडिट करके 'हरियाणा में फिर लगेगा लॉकडाउन' या 'बाजार बंद' जैसी झूठी खबरें फैला रहे हैं। साइबर सेल ने स्पष्ट किया है कि ऐसे अकाउंट्स को न केवल ट्रैक किया जा रहा है, बल्कि उन्हें ब्लॉक करने के लिए मेटा (Meta) को पत्र भी लिखा जा रहा है।

24x7 मॉनिटरिंग और सख्त कार्रवाई

हरियाणा के सभी जिलों की साइबर यूनिट्स को 24 घंटे एक्टिव रहने के निर्देश दिए गए हैं। पुलिस की एक विशेष टीम केवल इंस्टाग्राम एक्सप्लोर (Explore) और ट्रेंडिंग ऑडियो पर नजर रख रही है। यदि कोई रील आपत्तिजनक पाई जाती है, तो रील बनाने वाले का आईपी एड्रेस और लोकेशन ट्रैक की जाएगी। धारा 505 और आईटी एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज होगा। साथ ही संबंधित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को अकाउंट डिलीट करने का नोटिस भेजा जाएगा।

अभिभावकों के लिए सलाह

पुलिस ने अपील की है कि माता-पिता अपने बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों पर नजर रखें। अक्सर कम उम्र के युवा अनजाने में ऐसी सामग्री शेयर कर देते हैं, जो बाद में उनके करियर और भविष्य के लिए बड़ी मुसीबत बन सकती है।

फिल्मी सितारों की रक्षा करेगा हरियाणा का ये ऐप', महाराष्ट्र पुलिस ने मांगी डिटेल..

हिसार/हरियाणा (नरेश गुणपाल)

बॉलीवुड में फिल्मी कलाकारों को आए दिन मिल रही फिरौती की धमकियों पर कार्रवाई करने में हरियाणा पुलिस की भूमिका अहम होने वाली है। हरियाणा देश का पहला ऐसा राज्य है जिसने फिरौती की धमकियों पर लगाम लगाने के लिए अभेद्य मोबाइल ऐप लागू किया है।

चंडीगढ़ : बॉलीवुड में फिल्मी कलाकारों को आए दिन मिल रही फिरौती की धमकियों पर कार्रवाई करने में हरियाणा पुलिस की भूमिका अहम होने वाली है। हरियाणा देश का पहला ऐसा राज्य है जिसने फिरौती की धमकियों पर लगाम लगाने के लिए अभेद्य मोबाइल ऐप लागू किया है।

हरियाणा पुलिस की यह योजना महाराष्ट्र पुलिस को पसंद आ गई है। महाराष्ट्र पुलिस ने हरियाणा पुलिस से यह आइडिया तथा इसके आउटकम के बारे में जानकारी मांगी है। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में आए दिन फिरौती मांगने की घटनाएं सामने आती रहती हैं।

हरियाणा पुलिस द्वारा हालही में इस तरह की घटनाओं पर लगाम लगाने के लिए अभेद्य मोबाइल ऐप लागू किया गया है। सबसे पहले महाराष्ट्र पुलिस ने इस मोबाइल ऐप में दिलचस्पी दिखाई है। महाराष्ट्र पुलिस ने हरियाणा पुलिस ने इस ऐप की तकनीक, संचालन, आउटकम आदि के बारे में विस्तृत जानकारी मांगी है।

हरियाणा में अभी इस मोबाइल ऐप को गूगल प्ले स्टोर पर नहीं डाला गया है। फिलहाल जिले के एसपी के माध्यम से इसका एक्सेस दिया जा रहा है। महाराष्ट्र पुलिस इसे सार्वजनिक करना चाहती है। हरियाणा पुलिस की सोशल मीडिया टीम द्वारा इस मोबाइल ऐप का फीडबैक एकत्र किया जा रहा है। जिसके आधार पर केस रिपोर्ट तैयार की जाएगी। इस रिपोर्ट को महाराष्ट्र समेत अन्य राज्यों से साझा किया जाएगा।

हरियाणा में अभी यह ऐप शुरू किया गया है। करीब 15 से 20 दिन प्रदेश के सभी जिलों में चलने तथा इसका प्रेक्टिकल होने के बाद ही इसे अन्य राज्यों के साथ साझा किया जाएगा। ट्रायल रन में आने वाली दिक्कतों को सुलझाया जाएगा। फिलहाल महाराष्ट्र पुलिस ने इसके बारे में जानकारी मांगी है।

वैश्विक ऊर्जा संकट बनाम लॉकडाउन की आशंका?- क्या दुनियाँ फिर कोविड-19 जैसे दौर की ओर बढ़ रही है या यह केवल भय और अफवाहों का जाल है? -समग्र विश्लेषण

वैश्विक ऊर्जा संकट बनाम लॉकडाउन की आशंका?- क्या दुनियाँ फिर कोविड-19 जैसे दौर की ओर बढ़ रही है या यह केवल भय और अफवाहों का जाल है? -समग्र विश्लेषण क्या दुनियाँ एक बार फिर लॉकडाउन की ओर बढ़ रही है?- अफवाह बनाम ज़मीनी हकीक- भय,भ्रम और बदलती वैश्विक वास्तविकता पीएम की लगातार बैठकें,देश में तेल,गैस और अन्य आवश्यक संसाधनों की आपूर्ति लगातार सुनिश्चित करना -अफवाहें फैलाने वालों के खिलाफ सख्त दंडात्मक कार्रवाई की चेतावनी को ध्यान में रखना ज़रूरी- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर कोविड -19 महामारी ने दुनियाँ को जिस तरह से झकझोर कर रख दिया था,उसकी स्मृतियाँ आज भी लोगों के मन में ताज़ा हैं।2020-21 के दौरान लगाए गए लॉकडाउन,आर्थिक गतिविधियों का ठप होना,सड़कों पर सन्नाटा और अनिश्चित भविष्य ये सब अनुभव आज भी समाज की सामूहिक चेतना में गहराई से बसे हुए हैं।ऐसे में जब 2026 में ऊर्जा संकट, पश्चिम एशिया में बढ़ते संघर्ष और सरकारों की लगातार बैठकों की खबरें सामने आती हैं,तो स्वाभाविक रूप से लोगों के मन में यह सवाल उठता है,क्या दुनियाँ एक बार फिर लॉकडाउन की ओर बढ़ रही है? क्या यह एक नए प्रकार का ऊर्जा लॉकडाउन होगा? या यह केवल अफवाहों औरसोशल मीडिया की उपज है?मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह बताना चाहता हूं क़ि इस बार संकट का कारण कोई वायरस नहीं,बल्कि ऊर्जा आपूर्ति से जुड़ी अनिश्चितताएँ हैं।पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के कारण तेल और गैस की वैश्विक आपूर्ति प्रभावित होने की आशंका ने कई देशों को सतर्क कर दिया है। कुछ देशों में बिजली की खपत कम करने के लिए स्कूल-कॉलेजों को अस्थायी रूप से बंद किया जा रहा है,सरकारी दफ्तरों में सप्ताह में केवल चार दिन काम का मॉडल अपनाया जा रहा है, और वर्क फ्रॉम होम को फिर से प्रोत्साहित किया जा रहा है।यह स्थिति भले ही कोविड जैसी स्वास्थ्य आपातकाल नहीं है, लेकिन इसके सामाजिक और आर्थिक प्रभाव उतने ही गहरे हो सकते हैं।श्रीलंका जैसे देशों में पहले से ही ऊर्जा संकट के कारण सड़कों पर सन्नाटा देखने को मिल रहा है। यह स्थिति इस बात का संकेत है कि ऊर्जा संकट केवल आर्थिक समस्या नहीं है,बल्कि यह सामाजिक स्थिरता और नागरिक जीवन को भी सीधे प्रभावित करता है।भारत की स्थिति की व्याख्या हम,सतर्कता लेकिन घबराहट नहीं के रूप में कर सकते हैं,भारत भी इस वैश्विक संकट को लेकर सरकार पूरी तरह सतर्क है। पीएम ने राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ 26 मार्च 2026 को शाम साढ़े छह बजे बैठक कर स्थिति की समीक्षा की है।इन बैठकों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि देश में तेल,गैस और अन्य आवश्यक संसाधनों की आपूर्ति सुचारू रूप से बनी रहे। रिपोर्ट्स के अनुसार, भारत के पास लगभग 60 दिनों का ईंधन भंडार उपलब्ध है, जो तत्काल किसी बड़े संकट की संभावना को कम करता है।सरकार ने यह भी स्पष्ट किया है कि देश में किसी प्रकार का लॉकडाउन लगाने की कोई योजना नहीं है।वित्त मंत्री संसदीय कार्य मंत्री और पेट्रोलियम मंत्री ने संयुक्त रूप से बयान देकर इन अफवाहों को खारिज किया है। भारत में लॉकडाउन के संदेह का जन्म संसद में पीएम के बयान की गलत व्याख्या,अफवाहों के कारण कुछ जगहों पर पैनिक बाइंग की स्थिति उत्पन्न हुई, इंडियन ऑइल कारपोरेशन और भारत पेट्रोलियम ने सफाई दी हैसरकार का स्पष्ट संदेश है क़ि देश में पर्याप्त फ्यूल स्टॉक मौजूद है। लॉकडाउन और फ्यूल क्राइसिस की खबरें पूरी तरह भ्रामक है सोशल मीडिया पर फैल रही गलत जानकारी से सतर्क रहने की अपील की गई है।27 मार्च 2026 को भारत सरकार ने स्पष्ट किया है कि देश में लॉकडाउन की कोई योजना नहीं है और ऐसी अफवाहें फैलाने वालों के खिलाफ सख्त दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी। केंद्रीयमंत्री ने सोशल मीडिया पर चल रही लॉकडाउन की खबरों को पूरी तरह गलत और हानिकारक बताया है। लोग घबराएं नहीं और न ही अफवाहों पर ध्यान दें, क्योंकि ईंधन और जरूरी वस्तुओं का पर्याप्त भंडार है।

साथियों बात अगर हम सोशल मीडिया और अफवाहों का तंत्रः डर का नया स्रोत इसको समझने की करें तो आज के डिजिटल युग में सूचना जितनी तेजी से फैलती है,उतनी ही तेजी से भ्रम और अफवाहें भी फैलती हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर ऊर्जा लॉकडाउन और

देशव्यापी बंदी जैसे शब्द ट्रेंड करने लगे,जिससे आम लोगों में डर का माहौल बन गया।पेट्रोल पंपों पर लंबी कतारें लगने लगीं,गैस सिलेंडर और आवश्यक वस्तुओं की खरीद अचानक बढ़ गई।यह स्थिति बताती है कि संकट केवल वास्तविक नहीं होता, बल्कि उसकी धारणा भी उतनी ही प्रभावशाली होती है। जब लोग यह मान लेते हैं कि कोई बड़ा संकट आने वाला है,तो उनका व्यवहार भी उसी अनुसार बदल जाता है,चाहे वास्तविक स्थिति उतनी गंभीर न हो।

साथियों बात अगर हम भारत की रणनीतिः संतुलन और स्थिरता को समझने की करें तो भारत ने पिछले कुछवर्षों में ऊर्जा क्षेत्र में विविधीकरण और आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर और पवन ऊर्जा पर बढ़ता जोर रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार, और आपूर्ति श्रृंखलाओं का विविधीकरण ये सभी कदम भारत को इस प्रकार के संकटों से निपटने में सक्षम बनाते हैं।सरकार का वर्तमान फोकस स्पष्ट हैःआपूर्ति श्रृंखला को बनाए रखना,कीमतों को नियंत्रित रखना,जनता में घबराहट को रोकना,जनता की भूमिका-संयम और जागरूकता- किसी भी संकट के दौरान सरकार की नीतियों के साथ-साथ जनता का व्यवहार भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि लोग अफवाहों पर विश्वास करके अनावश्यक खरीददारी करते हैं, तो इससे कृत्रिम संकट उत्पन्न हो सकता है।इसलिए यह आवश्यक है कि लोग केवल आधिकारिक स्रोतों पर ही भरोसा करें और किसी भी जानकारी को साझा करने से पहले उसकी सत्यता की जांच करें।

साथियों बात अगर हम राजनीतिक बयानबाज़ी और उसक़े प्रभाव को समझने की करें तो,इस पूरे घटनाक्रम में राजनीतिक बयानबाज़ी ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने यह आरोप लगाया कि केंद्र सरकार एक बार फिर लॉकडाउन लगा सकती है और लोगों को घरों में कैद कर सकती है।उन्होंने 2021 के लॉकडाउन और चुनावों का उदाहरण देते हुए अपनी बात रखी।हालांकि, ऐसे बयान अक्सर राजनीतिक दृष्टिकोण से दिए जाते हैं,लेकिन इनका असर आमजनता पर गहरा पड़ता है। जब एक वरिष्ठ नेता इस तरह की आशंका व्यक्त करता है, तो लोगों के मन में अनिश्चितता और भय और अधिक बढ़ जाता है।

साथियों बात अगर हम पीएम के संसद में बयान और उसक़े गलत अर्थ को समझने की करें तो,सोशल मीडिया पर यह दावा भी किया गया कि पीएम ने संसद में अपने संबोधन के दौरान लॉकडाउन का संकेत दिया था।लेकिन वास्तविकता यह है कि उन्होंने केवल कोविड-19 महामारी का उदाहरण देते हुए यह कहा था कि हमें हर प्रकार की चुनौती के लिए तैयार रहना चाहिए। इस बयान को संदर्भ से हटाकर प्रस्तुत किया गया, जिससे भ्रम की स्थिति पैदा हुई।यह घटना यह दर्शाती है कि किस तरह आधी-अधूरी जानकारी या संदर्भ से हटाकर प्रस्तुत किए गए बयान बड़े पैमाने पर सटीक रूप से गलतफहमी पैदा कर सकते हैं।

साथियों बात अगर हम,क्या वैश्विक स्तरपर ऊर्जा लॉकडाउन संभव है? इसको समझने की करें तो,ऊर्जा लॉकडाउन का विचार नया है, लेकिन पूरी तरह असंभव नहीं। यदि ऊर्जाआपूर्ति में भारी कमी आती है,तो सरकारें बिजली और ईंधन की खपत को नियंत्रित करने के लिए कुछ प्रतिबंधात्मक उपाय लागू कर सकती हैं।हालांकि, यह कोविड-19 जैसे पूर्ण लॉकडाउन से अलग होगा।ऊर्जा संकट के दौरान संभावित उपायों में शामिल हो सकते हैंः(1)औद्योगिक गतिविधियों को सीमित करना (2) कार्यालयों में वर्क फ्रॉम होम को बढ़ावा देना (3) सार्वजनिक परिवहन को प्राथमिकता देना (4) बिजली और ईंधन की खपत परनियंत्रण लेकिन इन उपायों का उद्देश्य जीवन को पूरी तरह रोकना नहीं, बल्कि संसाधनों का संतुलित उपयोग सुनिश्चित करना होगा।

साथियों बात अगर हम इस पूरी स्थिति को अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यः में समझने की करें तो ऊर्जा और भू-राजनीति का जटिल संबंध है,ऊर्जा संकट केवल किसी एक देश की समस्या नहीं है,बल्कि यह एक वैश्विक चुनौती है। पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष का असर पूरी दुनियाँ पर पड़ रहा है। तेल और गैस कीआपूर्ति में किसी भी प्रकार की बाधा वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकती है।फ्रांस में आयोजित जी-7 विदेश मंत्रियों की बैठक में भारत के विदेश मंत्री ने भी स्पष्ट किया कि भारत किसी बिचौलिया देश की भूमिका नहीं निभा सकता। उनका यह बयान भारत की स्वतंत्र विदेश नीति और वैश्विक मंच पर उसकी भूमिका को दर्शाता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि वास्तविकता बनाम धारणा, वर्तमान स्थिति को यदि समग्र रूप से देखा जाए,तो यह स्पष्ट होता है कि दुनियाँ एक चुनौतीपूर्ण दौर से गुजर रही है, लेकिन यह कोविड-19 जैसी स्थिति नहीं है। ऊर्जा संकट एक गंभीर मुद्दा है,लेकिन इसका समाधान लॉकडाउन नहीं,बल्कि बेहतर प्रबंधन और अंतरराष्ट्रीय सहयोग में निहित है।भारत सहित अधिकांश देशों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि लॉकडाउन जैसी कोई योजना नहीं है। जो कुछ भी हो रहा है, वह सतर्कता और तैयारी का हिस्सा है,न कि किसी बड़े प्रतिबंध कीइसलिए यह कहा जा सकता है कि ऊर्जा लॉकडाउन की चर्चा अधिकतर अफवाहों और भय का परिणाम है वास्तविकता यह है किसरकारें स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं और आवश्यक कदम उठा रही हैं। ऐसे में सबसे महत्वपूर्ण है तथ्यों पर आधारित सोच, संयमित व्यवहार और सामूहिक जिम्मेदारी।दुनिया बदल रही है, चुनौतियाँ भी बदल रही हैं, लेकिन हर चुनौती का समाधान लॉकडाउन नहीं होता। इस बार भी, समाधान संतुलन, समझदारी और सहयोग में ही निहित है।

हर आखिरी लड़की को कैसे शिक्षित करें: दुनिया की सबसे बड़ी संभावनाओं का द्वार

विजय गर्ग

शिक्षा केवल एक मौलिक अधिकार नहीं है; यह एक परिवर्तनकारी शक्ति है जो समाजों, अर्थव्यवस्थाओं और भविष्य को आकार देती है। फिर भी, दुनिया भर में लाखों लड़कियां गरीबी, सांस्कृतिक बाधाओं, संघर्ष और प्रणालीगत असमानताओं के कारण कक्षाओं से बाहर हैं। हर आखिरी लड़की को शिक्षित करना महज एक नैतिक दायित्व नहीं है। यह मानवता का सबसे बुद्धिमान निवेश है।

लड़कियों को शिक्षित करने का महत्व

जब कोई लड़की शिक्षित हो जाती है, तो उसके लाभ उसकी व्यक्तिगत जिंदगी से कहीं अधिक होते हैं। वह स्वस्थ जीवन जीती, अधिक आय अर्जित करती तथा अपने समुदाय में सकारात्मक योगदान देती। शिक्षित महिलाएं बाद में विवाह कर लेती हैं, उनके बच्चे कम और स्वस्थ होते हैं, तथा वे अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने की अधिक संभावना रखती हैं। संक्षेप में, एक लड़की को शिक्षित करने से पीढ़ियां बदल जाती हैं।

बाधाएं जो अभी भी मौजूद हैं

प्रगति के बावजूद, कई बाधाएं लड़कियों की शिक्षा में बाधा डाल रही हैं

गरीबीः आर्थिक रूप से संघर्ष कर रहे परिवार अक्सर लड़कों की शिक्षा को लड़कियों की तुलना में प्राथमिकता देते हैं।

सांस्कृतिक मानदंडः कई समाजों में लड़कियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे स्कूली शिक्षा के बजाय घरेलू जिम्मेदारियों पर ध्यान केंद्रित करें।

प्रारंभिक विवाहः कई लड़कियों को बाल विवाह के कारण पढ़ाई छोड़नी पड़ती है।

सुरक्षा संबंधी चिंताएं: स्कूलों तक लंबी दूरी और असुरक्षित वातावरण उपस्थिति को हतोत्साहित करते हैं।

बुनियादी ढांचे की कमीः उचित स्वच्छता सुविधाओं का अभाव, विशेष रूप से किशोर लड़कियों के लिए, अनुपस्थिति का कारण बनता है।

समावेशी शिक्षा के लिए व्यावहारिक समाधान

यह सुनिश्चित करने के लिए कि हर लड़की को शिक्षा मिले, एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है:

1। सरकारी नीतियों को मजबूत करना

सरकारों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा कानून लागू करना होगा, छात्रवृत्ति प्रदान करनी होगी तथा लड़कियों के अनुकूल नीतियां बनानी होंगी। जो कार्यक्रम परिवारों को प्रोत्साहन प्रदान करते हैं, वे पढ़ाई छोड़ने की दर को कम करने में मदद कर सकते हैं।

2। सुरक्षित और सुलभ स्कूलों का निर्माण

स्कूलों को सुरक्षित पहुंच के भीतर होना चाहिए तथा उचित स्वच्छता से सुसज्जित होना चाहिए, विशेष रूप से लड़कियों के लिए अलग शौचालय। परिवहन सुविधाएं सुगम्यता को और बेहतर बना सकती हैं।

3। सामुदायिक जागरूकता और मानसिकता परिवर्तन

सामाजिक दृष्टिकोण बदलना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जागरूकता अभियान, स्थानीय नेताओं और शिक्षकों को लड़कियों की शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालने के लिए एक साथ काम करना चाहिए।

4।प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना

डिजिटल प्लेटफॉर्म दूरदराज के क्षेत्रों में शिक्षा ला सकते हैं। ऑनलाइन कक्षाएं, मोबाइल लर्निंग ऐप्स और रेडियो-आधारित शिक्षा उन अंतरालों को पाट सकती है जहां भौतिक स्कूल दुर्गम हैं।

5।शिक्षकों को सशक्त बनाना

शिक्षकों को ऐसी समावेशी कक्षाएं बनाने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए जो लड़कियों की भागीदारी को प्रोत्साहित करें। विशेष रूप से महिला शिक्षिकाएं रोल मॉडल के रूप में कार्य कर सकती हैं तथा लड़कियों में आत्मविश्वास पैदा कर सकती हैं।

परिवार और समाज की भूमिका

माता-पिता और समुदाय निर्णायक भूमिका निभाते हैं। लड़कियों को प्रोत्साहित करना, उनकी आकांक्षाओं को महत्व देना और भावनात्मक समर्थन प्रदान करना महत्वपूर्ण अंतर ला सकता है। समाज को लड़कियों को आश्रित के रूप में देखने से हटकर उन्हें भविष्य के नेताओं के रूप में मान्यता देने की आवश्यकता है।

वैश्विक और स्थानीय प्रयास

अंतर्राष्ट्रीय संगठन और सरकारें अभियानों, वित्तपोषण और नीतिगत ढांचे के माध्यम से लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास कर रही हैं। हालाँकि, वास्तविक परिवर्तन जमीनी स्तर पर होता है - जब समुदाय शिक्षा को एक साझा जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार करते हैं।

भविष्य के लिए एक दृष्टि

एक ऐसी दुनिया की कल्पना करें जहां हर लड़की को सीखने, बढ़ने और अपने सपनों को प्राप्त करने का अवसर मिले। ऐसी दुनिया अधिक स्वस्थ, अधिक न्यायसंगत और अधिक समृद्ध होगी। हर आखिरी लड़की को शिक्षित करना कोई असंभव सपना नहीं है। यह एक प्राप्य लक्ष्य है, यदि सामूहिक प्रयास किए जाएं।

निष्कर्ष

हर लड़की को शिक्षित करने की यात्रा चुनौतियों से भरी होती है, लेकिन इसके परिणाम बहुत बड़े होते हैं। इसके लिए सरकारों, समुदायों, परिवारों और व्यक्तियों की प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। जब हम एक लड़की को शिक्षित करते हैं, तो हम एक राष्ट्र को शिक्षित करते है। अब अभिनय का समय आ गया है क्योंकि किसी भी लड़की को पीछे नहीं छोड़ा जाना चाहिए।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार

रिश्तों की ताकत और सहारा

डॉ. विजय गर्ग

मानव जीवन की सबसे बड़ी ताकत रिश्ते हैं। यह वह बंधन है जो हमें एक दूसरे से जोड़ता है और हमारे जीवन को सार्थक बनाता है। रिश्तों का गर्मजोशी सिर्फ एक भावना नहीं है, बल्कि वह सहारा है जो कठिन समय में हमें मजबूत बनाता है।

आज के तेज गति वाले समय में, जहां हर कोई अपने-अपने कामों में व्यस्त है, रिश्तों की गर्मी कहीं न कहीं कम होती जा रही है। मोबाइल फोन और सोशल मीडिया ने हमें जोड़ा है, लेकिन दिलों की दूरी भी बढ़ गई है। हम एक ही घर में रहते हुए भी एक दूसरे से बैठकर बात करने का समय नहीं निकाल सकते हैं।

रिश्तों का गर्मजोशी प्यार, सम्मान और विश्वास से बनता है। जब हम अपने परिवार और दोस्तों के साथ खुलकर बात करते हैं, उनकी भावनाओं को समझते हैं और कठिन समय में उनका समर्थन करते हैं, तो रिश्ते मजबूत होते हैं। छोटी-छोटी बातें जैसे कि एक मुस्कान, एक प्यारा शब्द या किसी की परवाह करना। ये सभी चीजें रिश्तों में गर्मी लाती हैं।

लेकिन जब अहंकार, गलतफहमी और समय की कमी हो जाती है तो यही रिश्ते कमजोर होने लगते हैं।कभी-कभी हम अपने अहंकार के कारण माफी मांगने या किसी को माफ करने से हिचकिचाते हैं, जिससे दिलों में दूरी पड़ जाती है। यह दूरी रिश्तों की गर्मी को ठंडा कर देती है।

सच तो यह है कि रिश्तों को बनाए रखने के लिए समय और समर्पण की जरूरत होती है। जिस तरह एक पौधे को पानी की ज़रूरत होती है, वैसे ही रिश्तों को प्यार और ध्यान की ज़रूरत पड़ती है। अगर हम अपने प्रियजनों के लिए समय निकालें, उनकी बातें ध्यान से सुनें और उनके साथ खुशियाँ साझा करें, तो रिश्तों में गर्मजोशी स्वतः आ जाती है।

अंत में, रिश्तों का गर्मजोशी ही हमारे जीवन को खुशहाल और संतुष्ट करता है। धन-संपत्ति और सफलता के साथ-साथ, अगर हमारे पास प्यार करने वाले रिश्ते नहीं हैं, तो जीवन अधूरा लगता है। इसलिए आइए हम अपने संबंधों को समझें, उनकी सराहना करें और उनमें गर्मी बनाए रखें क्योंकि यही हमारी असली संपत्ति है।

इंदौर में 30—31 मार्च को साहित्यिक पत्रिकाओं का राष्ट्रीय समागम, देशभर के संपादक होंगे शामिल

डॉ. शैलेश शुक्ला

मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा आगामी 30 और 31 मार्च को इंदौर में आयोजित किया जा रहा दो दिवसीय 'साहित्यिक पत्रिका समागम' देशभर की साहित्यिक पत्रकारिता से जुड़े संपादकों, लेखकों, शोधार्थियों और प्रकाशन विशेषज्ञों को एक साझा मंच पर लाने वाला महत्वपूर्ण आयोजन माना जा रहा है। हिंदी सहित भारतीय भाषाओं की साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं के समक्ष बदलते समय में उत्पन्न हो रही चुनौतियों, उनके स्वरूप, सामग्री और भविष्य की दिशा पर गंभीर विमर्श के उद्देश्य से आयोजित यह समागम साहित्यिक जगत में विशेष उत्सुकता का केंद्र बना हुआ है। अकादमी के अनुसार, इस आयोजन के माध्यम से साहित्यिक पत्रकारिता के समक्ष उपस्थित आर्थिक, तकनीकी और पाठकीय संकटों पर न केवल चर्चा होगी, बल्कि उनके व्यावहारिक समाधान भी खोजने का प्रयास किया जाएगा।

समागम का उद्घाटन 30 मार्च को प्रातः 11 बजे से होगा, जिसमें 'देश और समाज के प्रति साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का दायित्व बोध : वीणा का शताब्दी संदर्भ' विषय पर विशेष विमर्श आयोजित किया जाएगा। इस सत्र में विभिन्न विश्वविद्यालयों और साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े विद्वान तथा प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'वीणा' के संपादक अपने विचार व्यक्त करेंगे। उद्घाटन सत्र में साहित्यिक पत्रिकाओं की ऐतिहासिक भूमिका, सामाजिक चेतना के निर्माण में उनका योगदान तथा बदलते मीडिया परिवेश में उनकी जिम्मेदारियों पर विशेष चर्चा अपेक्षित है। इसके बाद आयोजित प्रथम सत्र में पत्रिकाओं के स्वरूप और प्रस्तुति को केंद्र में रखते हुए 'जो दिखता है वही बिकता है' विषय पर विमर्श किया जाएगा, जिसमें यह विचार किया जाएगा कि साहित्यिक पत्रिकाओं के कलेवर और लेआउट में आकर्षण की कमी किस प्रकार पाठकों को उनसे दूर कर रही है और उन्हें अधिक पठनीय के साथ-साथ दर्शनीय बनाने की आवश्यकता क्यों है।

दोपहर बाद के सत्रों में समागम का स्वर और अधिक व्यावहारिक तथा बहुआयामी हो जाएगा। 'थोड़ी हँसी, थोड़ी खुशी' विषयक सत्र में साहित्यिक पत्रिकाओं में कार्टून और व्यंग्य चित्रों के प्रयोग पर चर्चा होगी, जबकि अगले सत्र में पत्रिका प्रकाशन से जुड़ी प्रशासनिक और आर्थिक प्रक्रियाओं पर विस्तृत मार्गदर्शन दिया जाएगा। इसमें आर.एन.आई. पंजीयन, दृश्य एवं प्रचार निदेशालय से संपर्क, डाक पंजीयन और वितरण व्यवस्था से संबंधित जटिलताओं को सरल भाषा में समझाया जाएगा। इसी क्रम में सरकारी अनुदान और विज्ञापन प्राप्त करने की प्रक्रियाओं पर भी विशेषज्ञ जानकारी साझा की जाएगी, जो विशेष रूप से छोटे और मध्यम स्तर की पत्रिकाओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। दिन के अंतिम चरण में साहित्यिक पत्रिकाओं की घटती प्रसार संख्या और वैश्विक स्तर पर उनके

अस्तित्व पर मंडरा रहे संकट पर चर्चा करते हुए संभावित समाधान तलाशे जाएंगे, जिसके बाद सायंकालीन विशेष सत्र में देशभर से आए संपादक अपनी-अपनी पत्रिकाओं के अब तक के योगदान और अनुभव साझा करेंगे।

समागम के दूसरे दिन, 31 मार्च को, विमर्श का केंद्र साहित्यिक सामग्री की गुणवत्ता, कलात्मक प्रस्तुति और आधुनिक मुद्रण तकनीक पर रहेगा। 'छपास की भूख के बीच संपादक धर्म का चीरहरण' विषय पर आयोजित सत्र में पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही रचनाओं के स्तर में गिरावट और संपादकीय मानकों पर पड़ रहे प्रभावों पर गंभीर चर्चा की जाएगी। इसके पश्चात आयोजित सत्र में साहित्य और चित्रांकन के संबंधों पर विचार करते हुए यह देखा जाएगा कि चित्र और कलात्मक प्रस्तुति किस प्रकार साहित्यिक पत्रिकाओं की सौंदर्यात्मकता और पठनीयता को बढ़ा सकते हैं। दोपहर बाद का सत्र आधुनिक मुद्रण तकनीकों और प्रकाशन के बदलते स्वरूप पर केंद्रित रहेगा, जिसमें नई तकनीकों के माध्यम से पत्रिकाओं की गुणवत्ता, प्रसार और लागत प्रबंधन पर प्रकाश डाला जाएगा।

दो दिवसीय इस समागम का समापन 'पाथेय' विषयक उद्यापन सत्र से होगा, जिसमें समागम के निष्कर्षों और भविष्य की दिशा पर समग्र विचार प्रस्तुत किए जाएंगे। आयोजन समिति के अनुसार, इस समागम से प्राप्त सुझावों और निष्कर्षों को संकलित कर साहित्यिक पत्रिकाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए एक मार्गदर्शक दस्तावेज तैयार करने की भी योजना है। साहित्यिक पत्रकारिता के समकालीन परिदृश्य में यह आयोजन न केवल संवाद का अवसर प्रदान करेगा, बल्कि साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं के भविष्य को लेकर ठोस रणनीति बनाने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

डॉ. शैलेश शुक्ला | Dr. Shailesh

लाल गलियारे का सूर्यास्तः नक्सलवाद मुक्ति के मुहाने पर भारत

आंतरिक सुरक्षा के इतिहास को बदल देगी 31 मार्च की तारीख?

ओ.पी. पाल (स्वतंत्र पत्रकार)

भारत के आंतरिक सुरक्षा इतिहास में 31 मार्च 2026 की तारीख महज एक कैलेंडर तिथि नहीं, बल्कि एक युग के अंत का उद्घोष बनने जा रही है। आधी सदी से अधिक समय तक देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ी चुनौती बना रहा नेपाल के पशुपति से लेकर आंध्र प्रदेश के तिरुपति तक फैला 'लाल गलियारा' (रेड कॉरिडोर) अब अपने अस्तित्व की अंतिम सांसे गिन रहा है, यानी 'नक्सलबाड़ी' से शुरू हुआ यह हिंसक अध्याय अब अपने अंतिम पृष्ठ पर है। गृह मंत्रालय की 'जीरो टॉलरेंस' नीति और 'सुरक्षा-विकास-विश्वास' के त्रिकोणीय प्रहार ने नक्सली नेटवर्क को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया है।

2018 में जहां 126 जिले इस समस्या से जूझ रहे थे, वहीं अब यह संख्या घटकर मात्र 08 रह गई है और अब केवल छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में 3 जिले ऐसे बचे हैं जिन्हें 'अत्यधिक प्रभावित' की श्रेणी में रखा गया है, जहां सुरक्षा बल का प्रहार अंतिम चरणों में है। 31 मार्च 2026 की समय-सीमा केवल एक प्रशासनिक लक्ष्य नहीं है बल्कि उन लाखों आदिवासियों की आकांक्षा है, जिन्होंने दशकों तक हिंसा का दंश झेला है। हालांकि उग्रवाद अपने अंतिम दौर में है लेकिन चुनौती अब इन क्षेत्रों में लोकतांत्रिक संस्थाओं को और मजबूत करने और विकास की गति को निरंतर बनाए रखने की है।

केंद्र सरकार की वामपंथी उग्रवाद (एलडब्ल्यूई) से निपटने के लिए वर्ष 2015 में शुरु की गई राष्ट्रीय नीति एवं कार्य योजना' ने आज आंतरिक सुरक्षा के लिहाज से इस लड़ाई की दिशा बदल दी? सरकार ने इसे केवल 'कानून-व्यवस्था' की समस्या न मानकर एक बहु-आयामी चुनौती माना और इस रण्नीतिक बदलाव के लिए सरकार ने सुरक्षा का अभेद्य चक्रव्यूह तैयार करने, राज्य पुलिस बलों के आधुनिकीकरण और केंद्रीय बलों के समन्वय पर जोर दिया। कंद्रीय गृह मंत्रालय के ताजा आंकड़ो पर गौर करें, तो इस योजना के तहत दुर्गम इलाकों में 656 फोर्टीफाइड पुलिस स्टेशन बनाए गए जो सुरक्षा बलों के लिए 'लॉजिस्टिक हब' साबित हुए। वहीं सुरक्षा संबंधी व्यय के तहत इस दौरान राज्यों को अब तक 3681.73 करोड़ रुपये जारी किए गए। सरकार की इस रणनीतिक पहल ने नक्सलियों के वित्तीय स्रोतों को भी पूरी तरह सुखा दिया । वहीं केंद्रीय एजेंसियों को 1224.59 करोड़ रुपये की मदद से हेलीकॉप्टर, ड्रोन और आधुनिक कैंप अवसंरचना प्रदान की गई। नक्सल प्रभावित राज्यों में नक्सलियों की 'इलाकों का कटना' और 'अशिक्षा' जैसी सबसे बड़ी ताकत को सड़कें और स्कूल जैसे बुनियादी विकास की योजनाओं ने आज खत्म कर दिया है। दो प्रमुख योजनाओं (आरआरपी और आरसीपीएलडब्ल्यूईए) के तहत 15,016 किलोमीटर सड़कों का जाल बिछाया गया। यही नहीं, 'लाल गलियारा' के दायरे में जंगलों के बीच 9,233 मोबाइल टावर चालू किए गए, जिससे नक्सलियों का सूचना तंत्र कमजोर हुआ। नक्सल प्रभावित राज्यों में 179 एकलव्य स्कूल और 46 आईटीआई के माध्यम से आदिवासी युवाओं के हाथों में बंदूक की जगह औजार और किताबें थमाई जा रही हैं। वित्तीय समावेशन के दृष्टिकोण से 6,025 अधिक डाकघरों, 1,804 बैंक शाखाओं और खोले गए 1,321 एटीएम ने बिचौलियों और नक्सलियों के समानांतर आर्थिक तंत्र को ध्वस्त कर दिया है।

मुख्यधारा में लौटने को मजबूर नक्सली

सरकार ने केवल बंदूकों के दम पर नहीं बल्कि 'विश्वास' के जरिए नक्सलवाद के खिलाफ इस जंग को जीता है। सरकार ने पुनर्वास पैकेज के माध्यम से बंदूक छोड़कर समाज में लौटने वाले नक्सलियों के लिए 'सुनहरा गलियारा' बनाया है। आंतरिक सुरक्षा के इतिहास में साल 2025 में 364 नक्सलियों का खात्मा, 1022 की गिरफ्तारी और सर्वाधक 2337 नक्सलियों का आत्मसमर्पण यह साबित करता है

कि नक्सलियों में अब माओवादी विचारधारा का आकर्षण पूरी तरह खत्म हो चुका है। पुनर्वास पैकेज के तहत उच्च रैंक कैडरों को 5 लाख रुपये और अन्य को 2.5 लाख रुपये दिये जा रहे हैं, वहीं 3 साल तक 10 हजार रुपये प्रति माह और व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यही नहीं, समर्पित हथियारों और गोला-बारूद के लिए अलग से प्रोत्साहन राशि की दी जा रही है। इसका मतलब सरकार ने केवल सैन्य बल का प्रयोग नहीं किया बल्कि नक्सलियों के वैचारिक और आर्थिक आधार पर प्रहार किया है। आज जब हम 31 मार्च 2026 की डेडलाइन की बात करते हैं, तो उसकी सफलता का असली श्रेय सुरक्षा बलों के अलावा उन शिक्षकों और स्वास्थ्य कर्मियों को भी जाता है जो सुरक्षा बलों के साथ-साथ उन इलाकों में पहुँचे जहाँ जाना मौत को दावत देना था। 'विकास' की इस सुगबुगाहट ने नक्सलियों के उस नैरेटिव को खत्म कर दिया है कि सरकार आदिवासियों की दुश्मन है। आज नक्सलवाद केवल एक ढ़हता हुआ ढांचा है जिसमें भारत 'सुरक्षा-विकास-विश्वास' के मंत्र के साथ एक ऐसे भविष्य की ओर बढ़ रहा है जहाँ विकास की रोशनी देश के सबसे दूरस्थ अंचलों तक बिना किसी डर के पहुंचेगी।

डेढ़ दशक वाला 'ब्लडी संडे' वाला दौर खत्म

सरकार की इस निर्णायक पहल ने आज शांति की नई इबारत रखते हुए साल 2010 के 'ब्लडी संडे' वाले दौर और आज के शांत होते बस्तर व अभुझमाड़ की तुलना इन आंकड़ों से की जा सकती है। साल 2025 में सुरक्षा बलों ने 364 नक्सलियों को मार गिराया, 1022 को गिरफ्तार किया और 2337 से आत्मसमर्पण कराकर नक्सलवाद की कमर तोड़ कर जनता में विश्वास कायम किया है। साल 2026 के ढ़ाई माह में दो दर्जन से ज्यादा उग्रवादी मारे जा चुके हैं और करीब 350 ने आधुनिक हथियारों के साथ आत्मसमर्पण करके समाज की मुख्यधारा में अपना नया जीवन शुरु करने का फैसला कर चुके हैं। पिछले एक दशक से ज्यादा समय में अब तक सुरक्षा बलो के विभिन्न अभियानों के तहत जहां 16,550 नक्सली गिरफ्तार किये जा चुके हैं। वहीं अब तक उच्च रैंक कैडरों समेत करीब 10,225 नक्सली आत्मसमर्पण कर चुके हैं। सरकारी आंकड़ो के मुताबिक, इस दशक में दिसंबर 2025 तक नक्सलवादी घटनाओं में जहां 1734 नागरिक मारे गये और उच्चाधिकारियों समेत करीब 600 सुरक्षाकर्मी शहीद हो चुके हैं। वहीं 1841 उग्रवादी मारे गये हैं। यही कारण है कि नक्सली हिंसा में 2010 की तुलना में आज घटनाओं में 88 फीसदी और मौतों में 90 फीसदी की कमी दर्ज की गई है। नक्सल से प्रभावित प्रभावित पुलिस स्टेशनों में भी 74 फीसदी कमी आई है।

बहु-आयामी रणनीति में 'समाधान'

गृह मंत्रालय ने में नक्सलवाद से निपटने के लिए 'समाधान' (SAMADHAN) रण नीति के रूप में एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया है, जिसमें(Smart Leadership) कुशल नेतृत्व और समन्वय, (Aggressive Strategy) उग्रवादियों के खिलाफ आक्रामक अभियान, (Motivation and Training) सुरक्षा बलों का मनोबल और बेहतर प्रशिक्षण, (Actionable Intelligence) सटीक खुफिया जानकारी का तंत्र, (Dashboard Based KPIs) विकास कार्यों की निरंतर निगरानी, (Harnessing Technology) ड्रोन और आधुनिक हथियारों का उपयोग, (Action Plan for Each Theatre) हर प्रभावित क्षेत्र के लिए अलग रणनीति और (No Access to Financing) नक्सलियों की फंडिंग और रसद आपूर्ति को रोकना शामिल रहा है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विचारधारा

देश में दशकों पहले, पश्चिम बंगाल के एक छोटे से गांव 'नक्सलबाड़ी' से उठी चिंगारी ने भारत के एक बड़े हिस्से को अपनी लपटों में ले लिया था। 'लाल गलियारा' के नाम से मशहूर यह इलाका पशुपति (नेपाल) से तिरुपति (आंध्र प्रदेश) तक फैला हुआ था। माना जाता है कि नक्सलवाद की जड़ें 1967 के किसान विद्रोह में निहित हैं, जिसका नेतृत्व चारु मजूमदार और कानू सान्याल ने किया था। यह विचारधारा माओत्से तुंग के 'सशस्त्र क्रांति' के सिद्धांत पर आधारित है, जिसका लक्ष्य लोकतांत्रिक व्यवस्था को उखाड़ फेंककर 'जनता की सरकार' स्थापित करना है। एक समय था जब नक्सलवाद का प्रभाव भारत के 10 से अधिक राज्यों में था, जिसे 'पशुपति से तिरुपति' तक का लाल गलियारा कहा जाता था। इसमें छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, बिहार और आंध्र प्रदेश जैसे राज्य प्रमुख रूप से शामिल थे।

दहेज़ नहीं लिया, या बस नाम बदल दिया?

(एक रुपये के दिखावे के पीछे छिपा "भात" और "रिवाज़" का सच—क्या सच में खत्म हो रही है दहेज़ प्रथा या सिर्फ बदल रहा है उसका रूप?)

— डॉ. सत्यवान सौरभ

भारतीय समाज में विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, बल्कि दो परिवारों का संबंध माना जाता है। यह संबंध परंपराओं, रीति-रिवाज़ों और सामाजिक मान्यताओं से जुड़ा होता है। लेकिन जब इन परंपराओं के पीछे छिपी मानसिकता पर सवाल उठता है, तो एक कड़वा सच सामने आता है—हमने बुराइयों को छोड़ा नहीं है, बस उनका स्वरूप बदल दिया है।

आजकल शादियों में एक नया चलन तेजी से उभर रहा है। बड़े गर्व के साथ यह घोषणा की जाती है—"हमने दहेज़ नहीं लिया।" यह सुनते ही एक सकारात्मक छवि बनती है कि समाज बदल रहा है, लोग जागरूक हो रहे हैं। लेकिन जैसे ही शादी की रस्में आगे बढ़ती हैं, यह आदर्शवाद धीरे-धीरे दिखावे में बदलता नजर आता है।

थाली में सजी नगदी, सोना-चांदी और महंगे उपहार—सब कुछ सलीके से प्रस्तुत किया जाता है। फिर एक प्रतीकात्मक अभिनय होता है—लड़का या उसका परिवार उस ढेर में से मात्र एक रुपया उठाता है, मानो यह सिद्ध कर रहा हो कि उन्होंने दहेज़ नहीं लिया। शेष सब कुछ "रिवाज़", "भात", "शगुन" या "उपहार" के नाम पर स्वीकार कर लिया जाता है।

यह दृश्य केवल एक रस्म नहीं, बल्कि हमारी सामाजिक मानसिकता का आईना है। सवाल यह नहीं कि एक रुपया लिया गया या नहीं; असली प्रश्न यह है कि क्या लड़की के परिवार पर आर्थिक या सामाजिक दबाव पड़ा या नहीं।

दहेज़ प्रथा सदियों से भारतीय समाज की एक गंभीर समस्या रही है। पहले इसे खुले तौर पर माँगा जाता था—नकदी, गाड़ियाँ, गहने। समय बदला, कानून सख्त हुए, जागरूकता बढ़ी, और इस प्रथा के खिलाफ आवाजें उठीं। लेकिन क्या दहेज़ वास्तव में समाप्त हुआ? शायद नहीं। आज इसने अपना रूप बदल लिया है। अब इसे सीधे माँगना अनुचित माना जाता है, इसलिए इसे परंपरा और सम्मान की आड़ में छिपा दिया गया है। "भात", "तिलक", "सगाई के उपहार" और "विदाई के तोहफे"—नाम भले बदल गए हों, पर लेन-देन की प्रवृत्ति वही है।

"भात" जैसी परंपराएँ, जो कभी स्नेह और आत्मीयता का प्रतीक थीं, आज कई जगह सामाजिक प्रतिस्पर्धा और दिखावे का माध्यम बन चुकी हैं। कितना सोना दिया गया, कितनी नगदी रखी गई, कितने महंगे वस्त्र और उपहार दिए गए—इन्हीं पैमानों पर अब "इज्जत" का आकलन होने लगा है। यह प्रवृत्ति न केवल आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों पर बोझ डालती है, बल्कि मध्यम वर्ग को भी अपनी क्षमता से अधिक खर्च करने के लिए विवश करती है।

दिखावे की यह संस्कृति आज के समाज की एक बड़ी विडंबना बन चुकी है। सोशल मीडिया ने इसे और हवा दी है, जहाँ हर आयोजन एक प्रदर्शन बन गया है। "हमने दहेज़ नहीं लिया" जैसे वाक्य भी कई बार नैतिकता के बजाय छवि निर्माण का माध्यम बन जाते हैं। परिणाम यह होता है कि एक झूठी धारणा बनती है कि दहेज़ खत्म हो रहा है, जबकि वास्तविकता इसके विपरीत होती है।

> यह दृश्य केवल एक रस्म नहीं, बल्कि हमारी सामाजिक मानसिकता का आईना है। सवाल यह नहीं कि एक रुपया लिया गया या नहीं; असली प्रश्न यह है कि क्या लड़की के परिवार पर आर्थिक या सामाजिक दबाव पड़ा या नहीं।

दहेज़ का सबसे खतरनाक रूप वह है, जो दिखाई नहीं देता—जो "अनकहा" होता है। कोई खुलकर कुछ नहीं मांगता, लेकिन अपेक्षाएँ स्पष्ट रहती हैं। "हमें कुछ नहीं चाहिए, आप अपनी खुशी से कर दीजिए" या "हमें तो कुछ नहीं चाहिए, लेकिन समाज में इज्जत भी तो रखनी होती है"—ये वाक्य सुनने में सहज लगते हैं, लेकिन इनके पीछे गहरा सामाजिक दबाव छिपा होता है। यह दबाव ही दहेज़ को मजबूरी बना देता है, चाहे उसे स्वेच्छा का नाम क्यों न दिया जाए।

कानून दहेज़ को अपराध घोषित करता है, लेकिन कानून केवल व्यवहार को नियंत्रित कर सकता है, मानसिकता को नहीं। जब तक समाज खुद यह नहीं मानेगा कि यह प्रथा गलत है, तब तक कोई भी कानून इसे पूरी तरह समाप्त नहीं कर सकता।

वास्तविक बदलाव के लिए हमें अपने दृष्टिकोण और व्यवहार दोनों को बदलना होगा। परंपराओं का पुनर्मूल्यांकन करना होगा और यह तय करना होगा कि कौन-सी परंपराएँ सार्थक हैं और कौन-सी केवल दिखावे और दबाव का माध्यम बन चुकी हैं। "भात" और "उपहार" तभी तक उचित हैं, जब वे पूरी तरह स्वेच्छा और सामर्थ्य के भीतर हों।

विवाह को सादगी और गरिमा के साथ स्वीकार करना होगा। यह समझना होगा कि यह कोई प्रदर्शन नहीं, बल्कि विश्वास और सम्मान का संबंध है। इसमें सबसे बड़ी जिम्मेदारी लड़के और उसके परिवार की है। उन्हें स्पष्ट रूप से यह तय करना होगा कि वे किसी भी रूप में, किसी भी नाम से लेन-देन स्वीकार नहीं करेंगे।

अंततः यह स्वीकार करना होगा कि सम्मान धन से नहीं, मूल्यों से आता है। जब तक समाज खर्च को प्रतिष्ठा से जोड़कर देखता रहेगा, तब तक यह समस्या बनी रहेगी।

अब समय आ गया है कि हम केवल यह कहने का दिखावा न करें कि "हमने दहेज़ नहीं लिया", बल्कि वास्तव में ऐसी स्थिति पैदा करें जहाँ किसी को कुछ देने या लेने की आवश्यकता ही न पड़े।

दहेज़ के खिलाफ असली जीत तब होगी,

जब एक रुपये का प्रतीकात्मक नाटक समाप्त होगा,

जब "रिवाज़" के नाम पर होने वाला लेन-देन रुकेगा,

और जब विवाह सच में समानता, सम्मान और प्रेम का बंधन बनेगा—

न कि लेन-देन का सौदा।

जवाहर पार्क ई ब्लॉक में भव्य एवं दिव्य भगवती जागरण और विशाल भंडारा समारोह पूर्वक संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। जवाहर पार्क ई ब्लॉक आरडब्ल्यूए अध्यक्ष डॉक्टर मिथिलेश कुमार एवं RWA के सक्रिय महिला मंडल, युवा मंडल एवं गण मान्य सदस्यों द्वारा भव्य भगवती जागरण एवं शानदार भंडारे का आयोजन लोगों के आकर्षण का केंद्र बना रहा।आरडब्ल्यूए प्रधान डॉक्टर मिथिलेश कुमार एवं उनकी धर्मपत्नी डॉक्टर सरस्वती कुमारी समय-समय पर धार्मिक एवं सामाजिक समारोह में अपनी गरिमामयी उपस्थिति से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करते रहते हैं। जवाहर पार्क ई ब्लॉक में नागरिक सुविधा मसलन 24*7 पानी की उपलब्धता , बिजली,साफ सफाई, बेहतर जल निकासी आदि की व्यवस्था अन्य ब्लाकों एवं क्षेत्र के लिए एक अनुकरणीय मिसाल बन गया है। यह सभी व्यवस्था आरडब्ल्यूए के योग्य कर्मठ एवं सर्वश्रेष्ठ प्रधान डॉक्टर मिथिलेश कुमार के अथक प्रयासों से संभव हो सका है। उनके द्वारा इस संपूर्ण कार्यक्रम में शुरू से समापन तक एकसमान लगे रहकर भगवती जागरण की झांकियां लोगों के लिए आकर्षण एवं कौतूहलता का केंद्र बना रहा। इस अवसर पर अंजना बारी जी के जन्म दिवस को केक काटकर उत्सव की तरह मनाया गया। भगवती जागरण के शुभ अवसर पर दुग्गल कॉलोनी की नवनियुक्त प्रेसिडेंट मीरा पांडे, सुभाष पांडे, शिक्षाविद सुरेश चौबे, विजेंद्र दीप्ति गीता एजुकेशन सोसायटी के प्रेसिडेंट एवं एंजेलिक मॉडर्न स्कूल के प्रमोटर शिक्षाविद प्रदीप कुमार दुबे, ब्रज भूषण मिश्रा, डॉक्टर सुनील कुमार, बलराम शर्मा, रामनिवास गुप्ता, कृष्ण कुमार बिंदल, नवीन ठाकुर, इंदर सिंह कैन, जगत मास्टर साहब, विजेंद्र गौतम, राकेश त्यागी, चरण सिंह, पिंकी जी, कुलदीप जी, महिला मंडल की वरिष्ठ सदस्य माया देवी, अंजना ठाकुर, शबनम शर्मा, प्रियंका यादव, रेखा राजपूत, कलावती दुबे, सारिका शर्मा, अंजू शर्मा, धर्मवती प्रजापति, बलराम शर्मा, कविता शर्मा, पवन कुमार, रेखा जी, पिंकी गुप्ता, आनंद गुप्ता, के अलावा भारी संख्या में स्थानीय लोग उपस्थित रहे। एक यशस्वी समाजसेवी के रूप में डॉक्टर मिथिलेश कुमार जन समस्याओं के समाधान के प्रति हमेशा संघर्षशील रहे हैं, यही कारण है कि अंबेडकर नगर में डॉक्टर मिथिलेश कुमार की अपनी एक खास पहचान एवं शख्सियत है।श्री आनंद गुप्ता एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पिंकी गुप्ता जी एवं उनके पति श्रीआनंद गुप्ता जी का सराहनीय योगदान रहा ।

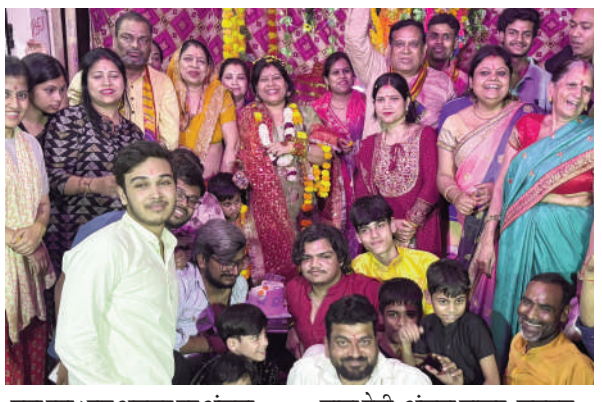

महानगरों में ईंधन संकट

डॉ. नीरज भारद्वाज

आज भारतीय ज्ञान परंपरा को लेकर अध्ययन अध्यापन हो रहा है। विचार करें तो भारतीय ज्ञान परंपरा और भारतीय समाज कभी किसी देश पर आश्रित नहीं रहा है। हमें जो भी चाहिए था, हमने शोधपरक दृष्टि से उसे वस्तु को यहां पैदा किया है। हमारे ऋषि-मुनियों, साधकों, संतों, शोधकर्ताओं ने सृष्टि में जड़ से लेकर वृक्ष के हर भाग पर शोध किया। नदी, पर्वतों, ग्रहों, नक्षत्रों, दिन-रात के पहरों, पलों आदि सभी का अध्ययन किया।हमारे स्वास्थ्य, पर्यावरण, समाज को कैसे ठीक रखा जा सकता है, उसका उपचार किया। उसके अलग-अलग नाम और उपयोग भी समाज को समझाये। लकड़ी का ही उदाहरण ले सकते हैं। यज्ञ में प्रयोग होने वाली आम की लकड़ी, जिसे समिधा कहा जाता है। चूल्हे में जलने पर इसे ईंधन कहा जाता है। चिता में लकड़ी लगाई जाती है। इस प्रकार अलग-अलग प्रयोग क्षेत्र में अलग-अलग शब्द प्रयोग में लाए गए। हमने अपने आसपास और वातावरण के हिसाब से फल-सब्जियां, अन्न आदि को बोया-खाया, जिससे हम स्वस्थ रहें।

हमारे समाज का विकास हर क्षेत्र में अलग-अलग तरीके से किया गया। गांव में ही कारीगरों को स्थापित किया गया। गांव का सारा काम बिना किसी बड़े खर्च के वहां रह रहे लोग आसानी से आपसी सहयोग से कर लेते थे। सभी काम आपसी भाईचारे के साथ किए जाते थे। जैसे-जैसे आक्रमणकारी भारत में आए, उन्होंने हमारी सामाजिक व्यवस्था को भंग किया। देश में नए-नए विवाद पैदा कर दिए। गांव से अलग किले, नगर और महानगर बसा दिए गए। जाति-धर्म के नाम पर लोगों को बांटकर आपस में ही लड़वाया गया। समाज विकसित कम बिखरा हुआ अधिक दिखाई देने लगा।

एक बार फिर गांव की ओर चलते हैं। गांव में कभी ऊर्जा, जल, खाद्य सामग्री आदि का संकट था ही नहीं और ना कभी होगा, यह भी एक दावे के साथ कहा जा सकता है। हमने गांव के बाहर पानी के तालाब बनवाए हुए थे जिसमें पशु-पक्षी सभी पानी पीते थे। बरसात का पानी वहां इक्ट्ठा होता था। तालाब के नजदीक ही कुएं बनवाएं, जिनका पानी मीठा रहा। पीने के प्रयोग और खान-पान में प्रयोग होने के चलते ही इन कुओं को हमने पूजा और कुआं पूजन आज भी भारतीय संस्कृति में है। पशुधन से दूध मिला, साथ ही उनके गोबर से उपले बनाकर खाना बनाने में अर्थात ईंधन के रूप में प्रयोग किया। उत्तम खेती के लिए गोबर का खाद प्रयोग में लिया। विचार करें तो किसान खेत में बहुत सारी फैसलें ऐसी भी बोता है, जिससे ईंधन पैदा होता है, जैसे-सरसों, ढांचा, अरहर आदि की खेती से बड़ी मात्रा में ईंधन निकलकर आता है, इससे चूल्हा जलता है। ईंधन अर्थात ऊर्जा का कोई संकट किसी भी तरीके का नहीं था।

आधुनिकता की दौड़ने नगरों-महानगरों को जन्म दिया लेकिन विचार करके देखें तो यहां सुविधाओं के साथ संकट की भी स्थिति पैदा हो जाती है। वर्तमान में वैश्विक स्तर पर जो युद्ध हो रहे हैं, उनसे हमारे देश का किसी प्रकार का कोई लेना-देना नहीं है और ना ही हम उस युद्ध में शामिल हैं। उन देशों की लड़ाई का संकट आज हमारे देश में भी कई प्रकार का संकट खड़ा कर रहा है जिसमें ऊर्जा संकट सबसे बड़ा है क्योंकि हम ऊर्जा के लिए आश्रित हो गए हैं। हमने अपनी ज्ञान परंपरा, अपने सामाजिक ढांचे को सही से समझा नहीं। अब घरेलू गैस, डीजल, पेट्रोल आदि की कमी के चलते लोग शहर से फिर गांव की ओर बढ़ रहे हैं। कोरोना के समय भी लोग शहर से गांव की ओर आए थे। सही मायने में हमारी सामाजिक और ज्ञान परंपरा गांव में ही बसती है। हमें अपने गांवों को उन्नत करना होगा, वहां पर साधन-सुविधाओं का विकास करना होगा। वैश्विक पटल पर दुनिया अपना अलग रंग रखती है लेकिन गांव व्यक्ति के मूल से जुड़े हैं। पीपल-बरगद के नीचे बैठे लोग डिप्रेशन में नहीं बल्कि मौज-मस्ती से बात करते हैं। हम आधुनिकता और नयापन का चोला ओढ़ कर महानगरों में भागते हैं। संकट के समय फिर गांव की ओर होते हैं। विदेशी आक्रमणकारियों ने हमें ऐसा व्यापार सिखाया है, जिससे हम उन पर आश्रित हो सके, हमें उनसे लाभ कम, हानि अधिक होती है।

सरकार को अपनी नीतियों में परिवर्तन लाना होगा।विचार करें तो गौशाला के अंदर ही गोबर गैस प्लांट की संख्या को बढ़ाना होगा। साथ ही पशु डेयरी उद्योग में भी गोबर गैस प्लांट को नए सिरे से जन्म देना होगा। सौर ऊर्जा से घर की रसोई का ईंधन बनाना आदि विषयों पर सोचना होगा। बहुत सारे परिवर्तनों के साथ सरकार को इस ओर ध्यान देना होगा। यदि हम किसी भी देश पर आश्रित रहेंगे तो विकसित भारत का जो स्वप्न है, वह कैसे संभव हो पाएगा। ऐसे तो विश्व में कहीं ना कहीं युद्ध और कहीं ना कहीं अर्थव्यवस्था, राजनीति आदि में परिवर्तन होता ही रहता है। ऐसे संकटों से निपटने के लिए सरकार को स्वयं बड़े-बड़े निर्णय लेने होंगे और आत्मनिर्भर की ओर बढ़ना होगा। जिससे कि समयानुसार हम

आत्महत्या विकल्प नहीं हो सकता?

सौरभ वार्ष्णेय

आज जीवन की सबसे बड़ी कड़वी सच्चाई है कि जीवन में थोडी सी निराशा आई नहीं कि मानव आत्महत्या की ओर अग्रसर हो जाता है । क्या उसे आत्महत्या के आलावा अन्य विकल्प नहीं दिखता ताकि वह इस सोच से आगे बढ़ सके। हमारे समाज को भी इस ओर सोचना होगा कि अगर कोई बेरोजगार है या किसी समस्या से ग्रसित है तो उसे प्यार से आगे बढने का संदेश दें जिससे वह उस निराशा समय से निकल सके। आज के तेज़ रफ्तार और प्रतिस्पर्धी दौर में मानसिक दबाव, असफलताओं का भय और अकेलेपन की भावना कई लोगों को भीतर से तोड़ रही है। ऐसे में आत्महत्या जैसे खतरनाक विचार मन में आना एक गंभीर सामाजिक और मानवीय संकट का संकेत है। यह केवल व्यक्तिगत कमजोरी नहीं, बल्कि हमारी सामाजिक संरचना, संवादहीनता और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता का परिणाम भी है। देश में आत्महत्या के आंकड़े तो उपलब्ध नहीं है ? लेकिन आए दिन अखबारों में यह खबर दिल को झकझोर देती है।

अधिकतर खबरें कॉलेज, किसान, व्यवसायी, बेराजगारी से ही आतीं हैं। कारण अलग अलग हो सकते हैं लेकिन शब्द एक ही आता है हताशा-निराशा ? माना कि जीवन के संघर्ष में कुछ समय ऐसा आ जाता है कि जब चारों ओर से अंधेरा दिखाई देता है जो आगे का रास्ता अंधेरा बंद कर देता है। ऐसे में कही से एक आशा की किरण दिखाई दे जाये तो कुछ हद तक इन आत्महत्याओं पर रोक लग सकेगी। आज हम एक बात अच्छी तरह समझ लें कि यह काया जो हमें प्रकृतित्व से मिली है। वह अनमोल है इसे वयर्थ नहीं कर सकते जब हमें किसी को जीवन देने का अधिकार नहीं है तो जीवन खत्म करने का अधिकार कहां से मिल जाता है।

अगर हम छात्र जीवन में हैं तो हमें बार बार असफलता हाथ लगती है तो क्या हम इस पर ही निराशा समझ लेंगे ? नहीं बरन यह असफलता ही हमें सफलता की कुंजी देती है जिससे जीवन भर हम कभी असफलता की और नहीं देती ? आज हम उन सफल महापुरुषों की ओर देखेंगे तो पता चलेगा कि उनके पीछे कितनी असफलताऐं जुड़ी है।

अगर किसान है तो फसल नष्ट होने पर हम निराशा की ओर चले जाते हैं क्योंकि फसल के लिए लिया गया उधार हमें भार मालूम चलता

है। ऐसा नहीं है कि अगर एक फसल चौपट हुई है तो जीवन का आधार कहीं से यानी जीवन जीना ही छोड़ दें नहीं हमें आगे बढना होगा । हमें किसान के साथ-साथ ऐसा भी कार्य करना होगा जिससे हमें एक सहायक कार्य भी करना होगा जो कि उसी खेती कार्य से जुड़ा होगा। इसके आलावा अन्य सरकारी सहायता पर ध्यान देना होगा।

इसके अलावा हम व्यवसायी हो या बेराजगार हैं तो हमें निराशा की जरूरत नहीं है। जीवन एक संघर्ष है। इसे ऐसे ही जीना पड़ता है। यह दुनिया है टांका टांकी को एक कुम्हार के घड़े की तरह लें जिसे कुम्हार तैयार करते समय उसमें चोटें मारता है।

आत्महत्या नहीं—जीवन का चयन करें

यह समझना जरूरी है कि जीवन में कठिनाइयाँ स्थायी नहीं होतीं। हर अंधेरी रात के बाद सुबह होती है। लेकिन जब व्यक्ति निराशा के गहरे गर्त में होता है, तो उसे यही अंधेरा स्थायी लगने लगता है। ऐसे समय में सबसे अधिक आवश्यकता होती है—समझ, सहानुभूति और संवाद की।

परिवार, मित्र और समाज की भूमिका यहां अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि कोई व्यक्ति असामान्य व्यवहार कर रहा है, खुद को अलग-थलग कर रहा है या बार-बार निराशा की बातें कर रहा है, तो इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। समय रहते संवेदनशील बातचीत, सहयोग और पेशेवर मदद किसी की जिंदगी बचा सकती है।सरकार और संस्थाओं को भी मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ और सस्ता बनाना होगा। स्कूलों और कार्यस्थलों पर काउंसलिंग की व्यवस्था, जागरूकता अभियान और हेल्पलाइन सेवाओं को मजबूत करना समय की मांग है। मानसिक स्वास्थ्य को शारीरिक स्वास्थ्य जितना ही महत्व देना होगा। सबसे अहम बात—हर व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि वह अकेला नहीं है। कठिन समय में मदद मांगना कमजोरी नहीं, बल्कि साहस है। जीवन अनमोल है, और हर समस्या का समाधान संभव है, बस जरूरत है सही दिशा और सहयोग की।आइए, म सब मिलकर एक ऐसा समाज बनाएं जहां कोई भी व्यक्ति अकेलेपन और निराशा के कारण अपनी जिंदगी खत्म करने का विचार न करे। जीवन चुनें क्योंकि हर सुबह एक नई उम्मीद लेकर आती है।

आज के तेज़ रफ्तार और प्रतिस्पर्धात्मक जीवन में मानसिक दबाव एक सामान्य वास्तविकता बन चुका है। पढ़ाई, नौकरी, पारिवारिक जिम्मेदारियां और सामाजिक अपेक्षाएं—इन सबके बीच व्यक्ति कई बार स्वयं को असहाय और अकेला महसूस करने लगता है। ऐसी परिस्थितियों में कुछ लोग आत्महत्या जैसे कठोर कदम के बारे में सोचने लगते हैं। लेकिन यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि आत्महत्या किसी भी समस्या का समाधान नहीं बल्कि स्थायी पीड़ा का कारण है।आत्महत्या एक पल की निराशा का निर्णय होता है, जबकि जीवन अनगिनत संभावनाओं से भरा होता है। कठिनाइयां जीवन का हिस्सा हैं, और हर समस्या का कोई न कोई समाधान अवश्य होता है। जो आज असहनीय लग रहा है, वह समय के साथ हल्का हो सकता है। इतिहास गवाह है कि अनेक महान व्यक्तियों ने गहरे संघर्षों का सामना किया लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और अंततः सफलता हासिल की।

समाज में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर अभी भी जागरूकता की कमी है। लोग अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त नहीं कर पाते, जिससे अंदर ही अंदर तनाव बढ़ता जाता है। ऐसे में जरूरी है कि हम अपने आसपास के लोगों के प्रति संवेदनशील बनें, उनकी बातों को ध्यान से सुनें और उन्हें सहारा दें। परिवार और मित्रों का साथ किसी भी कठिन परिस्थिति में व्यक्ति को संभाल सकता है।शिक्षा संस्थानों और कार्यस्थलों को भी इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। काउंसलिंग सेवाएं, तनाव प्रबंधन कार्यक्रम और सकारात्मक वातावरण व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक हो सकते हैं। सरकार और समाज दोनों को मिलकर ऐसे प्रयास करने होंगे जिससे लोग मानसिक समस्याओं को छिपाने के बजाय खुलकर बात कर सकें। यह याद रखना चाहिए कि जीवन अमूल्य है। हर अंधेरी रात के बाद सुबह होती है। निराशा के क्षणों में धैर्य रखना और सहायता मांगना कमजोरी नहीं, बल्कि साहस का प्रतीक है। यदि हम स्वयं या हमारे आसपास कोई व्यक्ति कठिन दौर से गुजर रहा है, तो उसे यह विश्वास दिलाना हमारी जिम्मेदारी है कि वह अकेला नहीं है। आत्महत्या नहीं, जीवन चुनें—क्योंकि हर जीवन महत्वपूर्ण है और हर समस्या का समाधान संभव है।

राजा सरायकेला एवं पूर्व मुख्यमंत्री ने ऐतिहासिक अखाड़े स्थल से आरंभ किया जूलूस

बेनी बाबू अखाड़ा , राजूभोल युद्ध फरिखार का स्थल रहा है सरायकेला का महावीर अखाड़ा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , चैत्र शुक्ल रामनवमी के पावन अवसर पर महावीर अखाड़ा जूलूस युद्ध के देवता महादेव पंचदेउल , श्री राम बंजर वली मंदिर पास से आरंभ हुआ ।इस ऐतिहासिक स्थल का पुराना संबंध सरायकेला छऊ के उन्नत गुरु बेनी बाबू अखाड़ा व उत्कलीय फरिखंडा धारी फरिखार राजूभोल का इलाका रहा है ।जूलूस का आरंभ सरायकेला के राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन तथा जलेश कवि को बजरंगबली कद-काठी की प्रतिमा के सामने सांकेतिक रूप तलवार व लाठी संचालित कर किया गया ।

राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव , पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन समाजसेवी जलेश कवि समेत कर्मठ युवाओं द्वारा पारंपरिक रूप से तलवार चलाकर किया गया। इस दौरान आकर्षक झांकियां, पारंपरिक वाद्य यंत्रों की धुन और जय श्रीराम के जयघोष से पूरा वातावरण गुंजायमान हो उठा ।

अगर हम देवता व स्थल विशेष पर जाएं तो हमारे शास्त्रों में एकादश रूद्र के रूप में हनुमान जी जाने जाते है। मां अंजनी के लाल वज्र -अंग -बली जी की आराधना उनकी हर मंदिर में आज होती है। और लाठी ,तलवारें लहराकर उनके सम्मान में प्रदर्शित होते है । हनुमान जी को ओड़िया सैन्य सामंत तब अपनी तलवारों में आवाहन कर स्थान देते साथ ही उन भैरव, भैरवियों को जब वे युद्ध में जाते । व्यास देव लिखते हैं आप महाभारत युद्ध में भी कपिध्वज के रूप में अर्जुन के रथ पर विराजमान थे ।

भलेही यह उत्कल भूखंड आज झारखंड में है , यह इलाका जो सरायकेला मांजना घाट के समक्ष है बड़ा ही ऐतिहासिक महत्व रखता है सरायकेला स्टेट माटी में ।

यह स्थल जहां यह आयोजन हुआ है प्रख्यात छऊ गुरू बेनी बाबू का अखाड़ा रहा ।अखाड़ा का अर्थ जहां छावनी से आया छऊ का रियाज का अखाड़ा रहा ,70-80 वर्ष के पहले तक यहां अखाड़े लगते थे । वही तलवारें वही लाठियां भांजी जाती थई गुरूओ व उनके शागिर्दों के बीच । यह प्रतिकात्मक सन्देश है मौजूदा समाज को उस एग्रीमेंट को को लेकर जिसे सरायकेला के अन्तिम शासक राजा आदित्य प्रताप सिंहदेव एवं लौह पुरुष के सचिव द्वारा 1947 में सरायकेला की कला -संस्कृति को ओडिशा के तर्ज पर रखे जाने हेतु देश को वचनबद्ध किया था ।

सरायकेला छऊ नृत्य कला केंद्र का जहां हर वर्ष केवल आठ आठ प्रतिकात्मक अखाड़े होने की बात कही जाती आवाज़ बुलंद कर सच तो यह है कि अतीत के उन युद्ध अखाड़े किनके रहे किनके द्वारा संचालित होता रहा एवं पोषक कौन थे कोई नहीं बताता -ऐसा क्यों भाई ? यह देश का ऐतिहासिक धरोहर भी है जहां से सरायकेला के जनता की वैश्विक कला छऊ का इतिहास जूड़ा है । उसकी भाषा , संस्कृति, साहित्य , परंपरा ओड़िया जनमानस का है ।तब तो श्री कलापीठ विदेशों में बतलाता था 70-80 वर्ष पूर्व । आज अपनी माटी में इतिहास दफन हो रहा है । इतनी बड़ी देश की एक समर कला छऊ अपनी मार्शल आर्ट ट्रेडिशन के साथ ।

सच तो यह है राजा गण सरायकेला राज्य उसके कला संस्कृति , भाषा , स्वाभिमान के वास्तविक पृष्ठ पोषक रहे हैं ।एक जमाना था पहले आठ नहीं अनेक पाईक अखाड़े रहे सरायकेला राज्य भर में लड़ाई -युद्ध के रियाज निमित्त उनका संरक्षक Serailkella Priencly State करता रहा । आज राजनीति की षड्यंत्रकारी कदम उसे समाप्त कर रखा है । यह इस माटी की वैभवशाली गाथा है अखाड़े को समर्पित , सामने में आनी चाहिए सरायकेला के वीरों की, शासकों की ऐतिहासिक अमानत । सच पुछिए तो आज तो हमारी सरायकेला छऊ भी परिचय का मोहताज है गया है । सरायकेला में Serailkella Priencly State को ,राजा सरायकेला को ,उनके इतिहास को हर हाल में सुरक्षा देने की जरूरत है ।कारण यह हमारी अंतरात्मा की पहचान है ।

जुलूस में शामिल युवाओं ने पारंपरिक अखाड़ा प्रदर्शन कर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में लिपु मोहंती, बापि मोहंती, भगरथी परिछा, जॉनी हजरा, बिशु कवि, दीपेश रथ, सीपु मोहंती, आकाश कर, शुभम कर, शिबा विषय, दीपु मोहंती, मोहित बोल, निखिल बोल, चिकु मोहंती, पवन कवि, करण साहु, मिकु मोहंती, नीरज दास, आकाश कुमार, सरोज महापात्र, सूरज महतो, रितेश महापात्र, सत्यम कर, विशाल दास, ऋषि साहु, अर्जुन कर, सोम कवि सहित सैकड़ों की तादाद में छोड़े बड़े तलवार , डंडे धारी , समिति के सदस्य एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

पूरे आयोजन के दौरान सुरक्षा और व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम किए था।

MLA के पति के खिलाफ केस दर्ज; कमिश्नरेट पुलिस नोटिस देने पहुंची

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा

भूबनेश्वर : कालाहांडी जिले की नरला MLA के पति ने BJD MLA मनोरमा मोहंती के पति और नरला ब्लॉक चेयरमैन दुर्गा प्रसाद मोहंती के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। यह शिकायत नरला तहसीलदार ने दर्ज कराई है। MLA के पति ने कथित तौर पर उन्हें जान से मारने की धमकी दी है।इस संबंध में कालाहांडी पुलिस कमिश्नरेट पुलिस के सहयोग से रविवार को बीजेडी विधायक के क्वार्टर पर पहुंची। भुवनेश्वर स्थित विधायक मनोरमा मोहंती क्वार्टर पर पहुंचीं और पूछताछ की।रिपोर्ट्स के मुताबिक, नरला MLA के पति और नरला ब्लॉक प्रेसिडेंट दुर्ग प्रसाद मोहंती ने लोकल तहसीलदार को जान से मारने की धमकी दी। तहसीलदार बिभु प्रसाद सिंह ने 15 मार्च को नरला पुलिस स्टेशन में लिखित शिकायत दर्ज कराई। इसके बाद पुलिस ने इंडियन पीनल कोड के तहत केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी। रविवार को कालाहांडी पुलिस भुवनेश्वर पहुंची और कमिश्नरेट पुलिस की मदद से MLA क्वार्टर पहुंचकर उनसे पूछताछ की ।इस बीच, कालाहांडी SP ने कहा कि पुलिस MLA के घर नोटिस देने गई थी। यह नोटिस कमिश्नरेट पुलिस की मदद से दिया गया था। कालाहांडी SP ने कहा, 'पुलिस गिरफ्तारी या किसी रेड के लिए नहीं गई थी। इसलिए, स्पीकर सुरमा पाढ़ी को जानकारी नहीं दी गई।' दूसरी ओर, नरला MLA मनोरमा महंती या उनके पति दुर्गाप्रसाद मोहंती की ओर से कोई जवाब नहीं मिला।

झारखंड शिक्षक पात्रता परीक्षा नियमावली में ओड़िया भाषा को महत्व

ओड़िया भाषी क्षेत्र के अधिकारी नहीं देते महत्व , विद्यार्थी अपनी मातृभाषा छोड़ने को मजबुर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची ,झारखंड में जेटीईटी (झारखंड शिक्षक पात्रता परीक्षा) 2026 की नई नियमावली के अनुसार ओड़िया , बांग्ला और भूमिज भाषाओं को क्षेत्रीय भाषाओं की सूची में शामिल किया गया है । यह 2016 के बाद आयोजित होने वाली पहली JTET है, जिसमें इन स्थानीय भाषाओं को मान्यता दी गई है। आवेदन की प्रक्रिया 21 अप्रैल से शुरू होगा

सनद रहे कि ओड़िया भाषा को लेकर झारखंड गठन समय से मूद्दा रहा है जब ओडिशा की तत्कालीन बीजेपी +बीजेडी सम्मिलित सरकार ने अपने विधानसभा में एक प्रस्ताव पारित कर सरायकेला खरसावां को पुनः ओडिशा में शामिल हेतु मांग कर डाला था । कारण सरायकेला खरसावां जिला कभी ओडिशा का राजस्व जिला रहा है जिसे ऐन केन प्रकारेण महज एक वर्ष के लिए बिहार में शामिल कराया गया था और आज तक उसे ओडिशा को लौटाया नही गया है। झारखंड में रखने का परिणाम यह रहा कि आज ओड़िआ भाषा प्राथमिक स्तर पर दम तोड चुकी है जिसमें झारखंड सरकार में रहे विभिन्न राजनीतिक दलों की स्थिति इस भाषा के महत्व देने के प्रति बेहद अफसोसजनक रही है ।

गत दो माह पूर्व सरायकेला खरसावां जिले में लगभग पौने तीन सौ शिक्षक की बहाली हुई है ,जहां ओड़िया शिक्षक नगण्य रहे हैं । ऊपर से अन्य भाषी अधिकारी सरायकेला खरसावां एवं सिंहभूम जिलों मे भाषा की महत्व को जाने वगैर ओड़िया को हर हाल में मिटाने में तरह तरह के षड्यंत्र करते रहते हैं । नतीजतन यहां सरकारी स्कूलों में आज शिक्षक नहीं के बराबर रह गये है । परिणाम बच्चे मजबूर होकर मातृभाषा छोड़ चुके हैं । जिस पर केंद्र व राज्य सरकार की मनसूबे को लेकर अधिकारियों की षड्यंत्रकारी भूमिका पर आयोग गठन कर जांच होनी चाहिए । एवं इनपर कठोर सजा दी जानी चाहिए । अब यह ओड़िया जनमानस की मांग बनकर शीघ्र उभरने जा रहा है ।

इसी बीच जहां तक जेटीईटी 2026 के नए पैटर्न की बात है उसके के अनुसार, इसमें भाषा I, भाषा II, और अन्य विषय शामिल होंगे, जिसमें स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा का पेपर शामिल है। इस परीक्षा में योग्यता हेतु RTE (शिक्षा का अधिकार) से पहले नियुक्त शिक्षक भी भाग ले सकते हैं। 21 अप्रैल से 2026 के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू होगी।

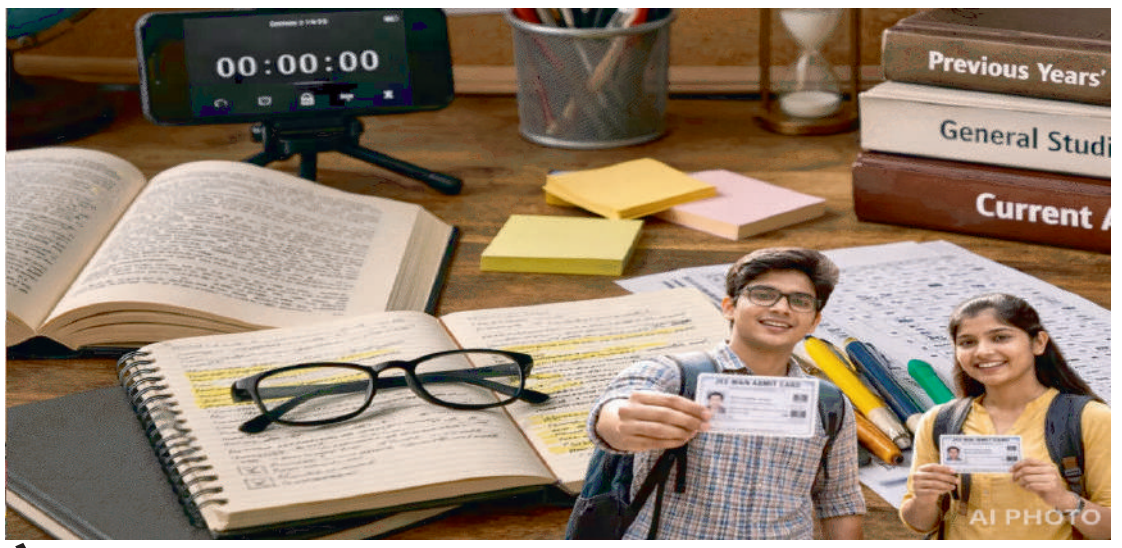

बीते कुछ सालों में वाहनों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है साथ-साथ सड़कों की देखभाल में अपेक्षित सुधार हो नहीं रहा

आप सभी जानते ही हैं कि बीते कुछ सालों में वाहनों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है। साथ-साथ सड़कों की देखभाल में अपेक्षित सुधार हो नहीं रहा है। फलस्वरूप सड़क प्रयोगकर्ताओं में पैदल चलने वाले ज्यादा संख्या में दुर्घनाग्रस्त हो रहे हैं। अत: कुछ निम्न सुझावों को अपनाकर हम-आप एक सुरक्षित पैदल यात्री बन सकते हैं।

सड़क के दोनों ओर किनारे की तरफ एक विशेष ऊँचा रास्ता [पैदल मार्ग] बना होता है, जो मुख्य रूप से पैदल यात्रियों की सुरक्षा के लिए बनाया जाता है, ताकि वे वाहनों के आवागमन [ट्रैफिक]से अलग होकर सुरक्षित रूप से चल सकें लेकिन किनारे बने इस पैदल मार्ग पर फुटकर सामान बेचने वाले या फल-सब्जी बेचने वाले दुकान लगा कर जगह को घेरे हुवे खुल्लम-खुल्ला व्यापार करते हैं।अतः पैदल चलने वालों को पैदल मार्ग[फुटपाथ]के नीचे चलना मजबूरी हो जाता है।

अब जब सड़क पर पैदल चलेंगे तो दुर्घटना की सम्भावना बहुत ज्यादा हो जाती है। इसलिये कृपया ध्यान रख, दुर्घटना से बचने के लिये आपको हमेशा सड़क पर दायें चलना है अर्थात अपने दायें तरफ सड़क पर चलेंगे तो सामने से आने वाले वाहन से अपने को बचा पायेंगे और वाहन वाला भी आपके प्रति सावधानी बरतेगा। इसके अलावा यदि आप समूह में हैं तो पंक्तिबद्ध होकर चले। चलते समय सड़क पर गिरे छिलके, गड्ढे, नाले के खुले ढक्कन आदि को बिल्कुल ध्यान रखें।

अब जब वाहन की बात करें तो वाहन में दुपहिया [साइकिल, मोटरसाइकिल, स्कूटी, स्कूटर], तीन-पहिया [ऑटो-रिक्शा, ई-रिक्शा, ट्राइसाइकिल या टेम्पो]के अलावा चार पहियों वाले छोटे वाहन [कार, जीप]के अलावा बड़े भारी वाहन यानि सार्वजनिक यात्री वाहन, मालवाहक वाहन, ट्रैक्टर-ट्रेलर, और मनोरंजक वाहन वगैरह भी सड़क पर चलते ही हैं।इन सभी वाहनों को अपने से बायें चलाया जाता है अर्थात वाहन चालक अपने बायें तरफ चलायेगा।अतः इस नियम का पालन सभी वाहन चलाने वालों को करना चाहिये। लेकिन जहाँ साइकिल चलाने वालों के लिये एक अलग सुरक्षित रास्ता बनाया हुआ है तो साइकिल वालों को उनके लिये बनाये गये रास्ते का उपयोग करना चाहिये।

कृपया सड़क पार करने के लिये सफेद पट्टियोंसे चिन्हित [जेब्रा क्रॉसिंग] का प्रयोग करें क्योंकि यह पैदल यात्रियों के लिए सबसे सुरक्षित स्थान है। यह चालकों को गति धीमी करने या रुकने का संकेत देता है, जिससे दुर्घटना का जोखिम कम होता है। कहीं-कहीं सड़क मुड़ती है अर्थात गली के मोड़ पर सफेद पट्टियोंसे चिन्हित न बना हो तो दायें-बायें देखकर धीरे-धीरे सड़क पार करें। सड़क को दौड़ कर पार करना ही नहीं चाहिये।

इसके अलावा जहाँ पदयात्री सेतु [फुटब्रिज] है या भूमिगत पार पथ है तो उसका उपयोग कर सड़क पार करना हमेशा सुरक्षित रहता है। कृपया सड़क विभाजक हो या लौह निर्मित जालियों (रैलिंग) के ऊपर से सड़क पार न करें।

उपरोक्त नियमों के पालन से आप स्वयं भी सुरक्षित रहेंगे और औरों को भी सुरक्षित रखने में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकेंगे।

गोवर्द्धन दास बिन्नाणी ₹राजा बाबू₹ जय नारायण व्यास

सीरवी समाज शमसाबाद बडेर में नवरात्रि के पावन पर्व पर कार्यक्रम सम्पन्न

परिवहन विशेष न्यूज

सीरवी समाज शमसाबाद बडेर में नवरात्रि के पावन पर्व पर कन्या पुजन और हवन की पूर्ण आहुति का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पूर्ण आहुति हवन मे निम्न समाज के बन्धुओं ने भाग लिया।

अध्यक्ष -आसाराम गेहलोत,सचिव -भोलाराम पंवार, पूर्व सचिव भूराराम परिहार, कोषाध्यक्ष -राजूराम परिहार -सन्तोष देवी, सलाहकार -हरिराम परिहारिया, नर्मदा देवी,

हवन पूर्ण आहुति के बाद माता जी आरती,बाबा रामदेव जी आरती के साथ कन्या पुजन कार्यक्रम की शुरुवात हुई सभी कन्याओं को आसन ग्रहण करवाकर, भोजन प्रसाद करवाया,समाज पदाधिकारी गण व बन्धुओं द्वारा दान दक्षिणा दे कर कार्यक्रम को पूर्ण किया। और पधारें हुए सभी भाई बन्धुओं ने भोजन प्रसाद ग्रहण कीया व बड़े ही उत्साह के साथ समाज बन्धुओ ने मील कर रामनवमी पर्व मनाया गया

विकास की अंधी दौड़ में सुलगता लद्दाख: विवेक रंजन श्रीवास्तव

हिमालय की धवल चोटियों और लद्दाख के सर्द मरुस्थल से उठी सोनम वांगचुक की आवाज आज केवल एक क्षेत्रीय मांग नहीं बल्कि विकास के नाम पर किए जा रहे खनन से कराहती हुई धरती की पुकार है। लद्दाख, जिसे भौगोलिक रूप से 'थर्ड पोल' या दुनिया का तीसरा ध्रुव कहा जाता है, अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और नाजुक पारिस्थितिकी के कारण वैश्विक जलवायु विमर्श के केंद्र में आ गया है। इस पूरे प्रकरण की जड़ें उस संवैधानिक सुरक्षा की मांग में छिपी हैं, जो भारतीय संविधान की छठी अनुसूची में दर्ज है। इसके पीछे का असली संकट पर्यावरणीय विनाश की आहट है।

सोनम वांगचुक ने जब शून्य से नीचे के तापमान में 21 दिनों का 'सात्विक अनशन' शुरू किया तो उनका उद्देश्य केवल राजनीतिक अधिकार प्राप्त करना नहीं था बल्कि उन ग्लेशियरों को बचाना था जो उत्तर भारत की जीवनधारा कहे जाने वाले जलतंत्र के मुख्य स्रोत हैं। लद्दाख की लगभग 97 प्रतिशत आबादी जनजातीय है जिनमें बौद्ध और मुस्लिम समुदायों का अनूठा मिश्रण है। ये जनजातियां सदियों से प्रकृति के साथ एक संतुलित तालमेल बिठाकर जीती आई हैं लेकिन पिछले कुछ दशकों में बढ़ते शहरीकरण, अनियंत्रित पर्यटन और औद्योगिक महत्वाकांक्षाओं ने इस संतुलन को हिला दिया है।

वांगचुक द्वारा रेखांकित प्रमुख मुद्दा यह है कि यदि लद्दाख को विशेष संवैधानिक दर्जा नहीं मिलता, तो बाहरी उद्योगों और खनन माफियाओं के लिए इस शांत और संवेदनशील क्षेत्र के द्वार खुल जाएंगे जिससे यहां के ग्लेशियरों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

आंकड़ों की दृष्टि से देखें तो हिमालयी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन की दर वैश्विक औसत से कहीं अधिक तेज है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि यदि वर्तमान दर से कार्बन उत्सर्जन जारी रहा, तो इस सदी के अंत तक हिंदूकुश-हिमालय क्षेत्र के एक-तिहाई ग्लेशियर पिघल सकते हैं। लद्दाख के लिए यह स्थिति किसी प्रलय से कम नहीं होगी क्योंकि यहां वार्षिक वर्षा नगण्य होती है और पूरी कृषि व्यवस्था ग्लेशियरों से निकलने वाले पानी पर ही टिकी है। वांगचुक ने अपने प्रयोगों और 'आइस स्तूप' जैसे नवाचारों के माध्यम से यह दिखाया है कि कैसे स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण किया जा सकता है लेकिन वे यह भी जानते हैं कि व्यक्तिगत प्रयास तब तक निष्प्रभावी रहेंगे जब तक कि नीतिगत स्तर पर बड़े उद्योगों को इस क्षेत्र से दूर नहीं रखा जाता। लद्दाख में सौर ऊर्जा और पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं लेकिन इनके अंधाधुंध विस्तार से स्थानीय संसाधनों पर भारी दबाव पड़ रहा है। एक अनुमान के अनुसार, लद्दाख में आने वाले पर्यटकों की संख्या वहां की स्थानीय आबादी से कई गुना अधिक पार हो चुकी है जिसके कारण कचरा प्रबंधन और पानी की खपत की समस्या विकराल हो चली है।

स्थानीय जनजातीय समुदायों की भूमिका इस पूरे प्रकरण में सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि वे ही इन पहाड़ों के असली संरक्षक हैं। उनकी पारंपरिक जीवनशैली न्यूनतम संसाधनों में अधिकतम संतुष्टि पर आधारित है, जो आज के 'कंज्यूमर कल्चर' के सर्वथा विपरीत है।

वांगचुक के इस आंदोलन ने वैश्विक जलवायु न्याय के सिद्धांत को भी मजबूती दी है। वे कहते हैं कि ₹सादा जीवन जिएं ताकि दूसरे जीवित रह सकें।₹ यह दर्शन उन विकसित देशों और बड़े शहरों के लिए एक चेतावनी है जिनकी विलासितापूर्ण जीवनशैली का खामियाजा लद्दाख जैसे दूरदराज के इलाकों के लोगों को भुगतना पड़ता है। लद्दाख के लोग उस कार्बन उत्सर्जन का हिस्सा नहीं हैं जो ग्लेशियरों को पिघला रहा है, फिर भी वे इसके पहले शिकार बन रहे हैं। वांगचुक ने इस विडंबना को बखूबी पकड़ा है और इसे एक जन-आंदोलन में बदल दिया है। उनका तर्क है कि यदि लद्दाख को स्वायत्तता मिलती है, तो स्थानीय परिषदें यह तय कर सकेंगी कि किस तरह का विकास उनके पर्यावरण के अनुकूल है। वे विकास के विरोधी नहीं हैं, बल्कि वे 'सतत संयत विकास' के पक्षधर हैं जो मिट्टी, पानी और हवा की शुद्धता को गिरवी रखकर न किया जाए।

इस संघर्ष का एक और गहरा पहलू लद्दाख की सामरिक स्थिति और वहां की भू-राजनीति है। सीमावर्ती क्षेत्र होने के नाते वहां बुनियादी ढांचे का विकास आवश्यक है लेकिन वांगचुक का कहना है कि यह विकास स्थानीय लोगों और प्रकृति की सहमति के बिना नहीं होना चाहिए। जनजातीय समुदायों का अपनी जमीन से गहरा आध्यात्मिक जुड़ाव होता है , और जब बड़े औद्योगिक घराने सौर फार्म या खनन परियोजनाओं के नाम पर इस जमीन का अधिग्रहण करते हैं, तो न केवल पर्यावरण बल्कि एक प्राचीन संस्कृति का भी लोप होने लगता है। आंकड़ों के अनुसार, लद्दाख के कई हिस्सों में ब्लैक कार्बन का स्तर बढ़ रहा है जो बर्फ की सफेदी को कम कर उसे सूरज की रोशनी सोखने के लिए मजबूर करता है जिससे बर्फ तेजी से पिघलती है। यह एक दुष्चक्र है जिसे रोकने के लिए वांगचुक ने अपनी देह को कष्ट देकर गांधीवादी तरीके से दुनिया का ध्यान खींचने का प्रयास किया है। यह समझना आवश्यक है कि सोनम वांगचुक का यह प्रकरण केवल लद्दाख की जीत या हार का मामला नहीं है। यह इस बात का लिटमस टेस्ट है कि क्या आधुनिक लोकतंत्र प्रकृति की पुकार को सुनने की क्षमता रखता है।

यदि हम लद्दाख के ग्लेशियरों को नहीं बचा पाए, तो सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा जिससे अंततः पूरे भारतीय उपमहाद्वीप की जल एवं खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी। जनजातीय लोगों का संघर्ष वास्तव में मानवता के अस्तित्व का संघर्ष है। वांगचुक ने जो मशाल जलाई है, वह हमें याद दिलाती है कि प्रकृति के पास हमारी जरूरतों के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन हमारे लालच के लिए नहीं। इस प्रकरण का संदेश स्पष्ट है कि अब समय केवल चर्चाओं का नहीं, बल्कि कड़े निर्णयों का है ताकि आने वाली पीढ़ियों को हम केवल रेगिस्तान और सूखी नदियां विरासत में न दें। लद्दाख की यह गूंज आने वाले समय में वैश्विक पर्यावरण नीतियों को प्रभावित करने वाली एक निर्णायक आवाज साबित होगी क्योंकि यह सीधे तौर पर हमारी जीवनशैली और हमारे पर्यावरणीय भविष्य के बीच अंतर्संबंधों को चुनौती देती है। (अदिति फीचर्स)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023